घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com अम्बिकापुर,वर्ष 22, अंक - 301- गुरूवार 03- सितम्बर 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028

बारिश की हर बूंद सहेजने में छत्तीसगढ़ देश में अग्रणी, 'कैच द रेन' अभियान में नंबर-1

नई दिल्ली,02 सितंबर 2026। बारिश के पानी को सहेजने और भूजल पुनर्भरण के प्रयासों में छत्तीसगढ़ ने देश में अपनी मजबूत पहचान बनाई है। जलशक्ति मंत्रालय के 'जल संचय जन भागीदारी' और 'कैच द रेन' अभियान में छत्तीसगढ़ ने उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए तीसरे चरण में देश में पहला स्थान हासिल किया है। नई दिल्ली के सुषमा स्वराज भवन में आयोजित जलशक्ति मंत्रालय के विभागीय शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने छत्तीसगढ़ के जनभागीदारी आधारित जल संरक्षण मॉडल को राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत किया। सम्मेलन के 'कैच द रेन' सत्र में उपमुख्यमंत्री अरुण साव ने राज्य में वर्षा जल संचयन, भू-जल पुनर्भरण और पेयजल स्रोतों के संरक्षण से जुड़े प्रयासों की जानकारी दी। मुख्यमंत्री साय ने देशभर में जल संरक्षण को और प्रभावी बनाने के लिए हर राज्य का अपना 'कैच द रेन' प्लान, बेहतर प्रदर्शन करने वाले राज्यों के लिए'स्टेट वाटर अवार्ड्स', बिसाग -एन के माध्यम से जल संरचनाओं की मैपिंग और मुख्य सचिव की अध्यक्षता में हर तीन महीने समीक्षा का सुझाव दिया। साय ने कहा कि वे किसान के बेटे हैं और अपने गांव बगिया में स्वयं हल चलाकर खेती कर चुके हैं इसलिए पानी की कीमत को करीब से समझते हैं। उन्होंने बताया कि देश के कुल क्षेत्रफल में करीब 4 प्रतिशत हिस्सेदारी वाला छत्तीसगढ़ 'जल संचय जन भागीदारी'अभियान में लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। राज्य ने जल संरक्षण को केवल सरकारी कार्यक्रम तक सीमित न रखकर किसानों, पंचायतों और स्थानीय समुदायों की भागीदारी से जनअभियान का रूप दिया है। मुख्यमंत्री ने छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले से शुरू हुए '5 प्रतिशत मॉडल' को जनभागीदारी आधारित जल संरक्षण की अनोखी पहल बताया। इसके तहत किसान स्वेच्छा से अपनी जमीन का 5 प्रतिशत हिस्सा भू-जल पुनर्भरण के लिए उपलब्ध करा रहे हैं। इस भूमि पर बारिश के पानी को रोकने और उसे धीरे-धीरे जमीन के भीतर पहुंचाने के लिए जल संरचनाएं विकसित की जा रही हैं। खेतों में बनाई गई इन संरचनाओं में बारिश का पानी एकत्र होता है और धीरे-धीरे जमीन में समाहित होता है। इससे भू-जल पुनर्भरण को बढ़ावा मिलने तथा सिंचाई और अन्य जरूरतों के लिए पानी की उपलब्धता बेहतर होने की उम्मीद है।

राम मंदिर के पहले सीईओ बने पूर्व एयर मार्शल जितेंद्र मिश्रा

चंपत राय की जगह गोविंद देव गिरि महासचिव बने ट्रस्ट में 3 नए सदस्य शामिल

अयोध्या,02 सितंबर 2026। अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि ट्रस्ट के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) को लेकर निर्णय हो गया है। एयर मार्शल जितेंद्र मिश्रा ट्रस्ट के सीईओ चुने गए हैं। बुधवार को अयोध्या की मणि रामदास छावनी में महंत नृत्यगोपालदास की अध्यक्षता में हुई ट्रस्ट की बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया। बैठक में ट्रस्ट के प्रमुख पदाधिकारियों के साथ ही आमंत्रित सदस्य भी मौजूद रहे। ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष गोविंद देव गिरि को नया महासचिव बनाया गया है। बैठक में ट्रस्टी बनाए गए महेश भागचंदका को कोषाध्यक्ष का चार्ज दिया गया। वहीं,ट्रस्ट की बैठक में तीन नए सदस्यों की भी घोषणा की गई है। नए शामिल होने वाले सदस्यों में मदन मोहन पांडेय अयोध्या के,महेश भागचंदका दिल्ली के और निर्मला यादव अयोध्या से हैं। ट्रस्ट ने एयर मार्शल जीतेंद्र मिश्रा को मंदिर का पहला मुख्य कार्यपालक अधिकारी नियुक्त किया है। भारतीय वायुसेना में करीब चार दशक तक महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभाल चुके मिश्रा अब राम मंदिर की प्रशासनिक और संचालन व्यवस्था को नई दिशा देंगे। एयर मार्शल जीतेंद्र मिश्रा मूल रूप से देवरिया जिले के भाटपाररानी क्षेत्र के भोपतपुरा गांव के रहने वाले हैं। उन्होंने 6 दिसंबर 1986 को भारतीय वायुसेना में फाइटर पायलट के रूप में कमीशन प्राप्त किया था। अपने लंबे सैन्य करियर में उन्होंने 18 से अधिक प्रकार के विमानों पर उड़ान भरी और 3,000 घंटे से ज्यादा का उड़ान अनुभव हासिल किया। कमांडिंग-इन-चीफ के पद पर भी रहे हैं। इसके अलावा एकीकृत रक्षा स्टाफ में उप प्रमुख (सिद्धांत,संगठन एवं प्रशिक्षण) जैसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। देश के साथ अमेरिका और ब्रिटेन के प्रतिष्ठित रक्षा संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले मिश्रा के पास बड़े संगठन के संचालन और नेतृत्व का व्यापक अनुभव है। राम मंदिर के सीईओ के रूप में उनकी नियुक्ति को इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि मंदिर अब निर्माण के चरण से आगे बढ़कर व्यवस्थित संचालन और वैश्विक धार्मिक-पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है। प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की आवाजाही, सुरक्षा, दर्शन व्यवस्था,कर्मचारी प्रबंधन, सुविधाओं का विस्तार और विभिन्न एजेंसियों के बीच समन्वय जैसी जिम्मेदारियां सीईओ के सामने होंगी।

ट्रस्टी मदन मोहन पांडेय बोले...चंपत राय के खिलाफ कोई कोई आरोप नहीं

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के नए सदस्य मदन मोहन पांडेय ने कहा...सरकार ने भी बहुत अच्छा काम किया है। उसने पर्याप्त जमीन उपलब्ध कराई। यह हमारा सौभाग्य है कि हमने सुप्रीम कोर्ट का मुकदमा जीता और मंदिर का निर्माण हुआ। इससे पहले वहां क्या था? कुछ भी नहीं। उन्होंने कहा- यात्रियों के लिए सुविधाएं और मंदिर में श्रद्धालुओं की सुविधा सुनिश्चित होनी चाहिए। जब तक कोई समस्या नहीं है, फिर और क्या चाहिए? पर्याप्त सुविधाएं हैं और आगे भी उपलब्ध कराई जाती रहेंगी। चंपत राय या किसी अन्य के खिलाफ कोई आरोप नहीं है।

वीएचपी अध्यक्ष बोले...जीतेंद्र मिश्रा के अनुभव से ट्रस्ट को फायदा होगा

वीएचपी के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार ने कहा कि श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के न्यासियों ने कई अच्छी खबरें दी हैं। यह पूरे हिंदू समाज के लिए खुशी का विषय है। गोविंददेव गिरि महाराज अब ट्रस्ट के महासचिव हैं। प्रशासनिक अनुभव की जरूरत को देखते हुए सेवानिवृत्त एयर मार्शल जीतेंद्र मिश्रा को श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का पहला सीईओ नियुक्त किया गया है।

जीडीपी के आंकड़ों में खेल कर रही सरकार,पूर्व वित्त सचिव ने बताया कि असल ग्रोथ 2.6 फीसदी : जयराम

नई दिल्ली,02 सितंबर 2026। कांग्रेस ने सरकार के 7.8 प्रतिशत जीडीपी वृद्धि दर के दावे पर सवाल उठाते हुए कहा कि पूर्व वित्त सचिव सुभाष गर्ग के आकलन के अनुसार वास्तविक जीडीपी वृद्धि करीब 2.6 प्रतिशत है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार आंकड़ों की बाजीगरी के जरिए अर्थव्यवस्था की तस्वीर चमकाने की कोशिश कर रही है, जबकि यह जमीनी हकीकत से अलग है। कांग्रेस महासचिव (संचार) एवं राज्यसभा सदस्य जयराम रमेश ने बुधवार को सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर कहा कि मोदी सरकार अपनी टीम और मीडिया के जरिए जितना फर्जी जीडीपी बढ़ोतरी का ढोल पीटेगी, उतना ही उसकी असलियत सामने आएगी। पूर्व वित्त सचिव सुभाष गर्ग ने इस दावे पर गंभीर सवाल उठाए हैं और उनका आकलन है कि वास्तविक जीडीपी वृद्धि 7.8 प्रतिशत के बजाय करीब 2.6 प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस चाहती है कि देश की अर्थव्यवस्था वास्तव में मजबूत हो, लेकिन मजबूत अर्थव्यवस्था का रास्ता आंकड़ों को सजाने से नहीं,बल्कि वास्तविक स्थिति को स्वीकार करने से निकलता है। सरकार को पहले अर्थव्यवस्था की वास्तविक स्थिति स्वीकार करनी चाहिए और उसके बाद सुधारों की दिशा में कदम उठाने चाहिए। जयराम ने कहा कि सरकार को युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों और निजी निवेश को बढ़ावा देने तथा मांग और आमदनी बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए।

वित्त मंत्री सीतारमण ने की विश्व बैंक प्रमुख अजय बंगा से मुलाकात,सहयोग बढ़ाने पर चर्चा

नई दिल्ली,02 सितंबर 2026। केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा से मुलाकात कर भारत तथा इस अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्था के बीच सहयोग बढ़ाने पर चर्चा की। वित्त मंत्रालय ने बुधवार को एक्स पोस्ट में बताया कि सीतारमण ने मंगलवार को एशविले में जी20 सदस्य देशों के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नर (एफएमसीबीजी) की बैठक से इतर विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा मुलाकात की। वित्त मंत्री ने भारत के साथ वर्ल्ड बैंक ग्रुप के लगातार जुड़ाव की सराहना की और 1.5 अरब डॉलर की डेवलपमेंट पॉलिसी फाइनेंसिंग (डीपीएफ) की तेजी से प्रोसेसिंग को सराहा। इस मुलाकात के दौरान सीतारमण ने सिडबी के जरिए एमएसएमई को आईएफसी से मिले सहयोग की भी तारीफ़ की। इस प्रक्रिया को रिकॉर्ड समय में पूरा किया गया और इसका एमएसएमई सेक्टर पर सकारात्मक असर पड़ा है। दोनों नेताओं ने भारत-वर्ल्ड बैंक समूह की साझेदारी को और मजबूत करने पर चर्चा की। इसमें भारत में एमआईजीए की बड़ी भूमिका पर विचार करना भी शामिल था,ताकि गारंटी के व्यवस्थित इस्तेमाल और प्राइवेट कैपिटल को ज्यादा जुटाकर कॉर्पोरेट,इंफ्रास्ट्रक्चर और म्युनिसिपल बॉन्ड मार्केट को गहरा किया जा सके। वित्त मंत्रालय ने बताया कि बातचीत में इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए क्रेडिट बढ़ाने के वास्ते सेक्टर-आधारित,प्रोग्राम-आधारित अप्रोच पर भी चर्चा हुई। बंगा ने भारत के इंफ्रास्ट्रक्चर में आए बड़े बदलाव की सराहना की और भारत के विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए वर्ल्ड बैंक ग्रुप के साधनों का और फ़ायदा उठाने के मौकों पर ध्यान दिया।

इसमें एमआईजीए की भागीदारी और विदेशों में निवेश करने वाली भारतीय कंपनियों के लिए पॉलिटिकल रिस्क इंश्योरेंस शामिल है। वित्त मंत्री सीतारमण ने भारत में'ग्लोबल डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर नॉलेज हब' बनाने के लिए वर्ल्ड बैंक ग्रूप के साथ भारत के जुड़ाव पर भी जोर दिया। इसमें खेती जैसे क्षेत्रों में टेक्नोलॉजी का फायदा उठाने के मौकों पर विचार करना शामिल है।

एमपी के रीवा में बड़ा हादसा...सीधी मार्ग पर बस-बल्कर में भिड़ंत,3 मौत 10 से ज्यादा लोग घायल

रीवा,02 सितंबर 2026। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 39 पर एक सड़क दुर्घटना हुई है। यह हादसा बदबार स्टैंड के पास हुआ है। सीधी की ओर से आ रही पवन एक्सप्रेस बस और रीवा की ओर से आ रहे बल्कर के बीच आमने-सामने जोरदार भिड़ंत हो गई। इसमें तीन लोगों के मौत हुई है। टक्कर इतनी भीषण थी कि बस के परखच्चे उड़ गए। स्थानीय निवासियों ने तुरंत गुढ़ थाना पुलिस को घटना की सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस प्रशासन और राहत दल मौके पर पहुंचे। स्थानीय लोगों की मदद से बचाव कार्य शुरू किया गया। दुर्घटना में लगभग 20 लोग घायल हुए हैं। उन्हें तत्काल एम्बुलेंस और अन्य वाहनों से संजय गांधी अस्पताल रीवा भर्ती कराया गया। रीवा हुजूर एसडीएम अनुराग तिवारी ने बताया कि बस में 43 लोग सवार थे।

अमेरिका ने ईरान में शादी समारोह पर हमला किया:19 की मौत,68 घायल,ईरान का जॉर्डन-बहरीन में जवाबी अटैक

वॉशिंगटन डीसी/तेहरान,02 सितंबर 2026। अमेरिका ने ईरान पर दूसरी बार हमला किया है। अमेरिकी सेना ने मंगलवार रात सिरिक, खुजस्तान, केश्म द्वीप और बंदर अब्बास पर मिसाइल और ड्रोन से हमले किए। ईरान के मुताबिक सिरिक में एक शादी समारोह के दौरान मिसाइल गिराए गिए। इसमें 19 लोगों की मौत हुई जबकि 68 लोग घायल हो गए। मरने वालों में 4 साल का एक बच्चा भी शामिल है। हमले के बाद सामने आए वीडियो और तस्वीरों में घायल बच्चे अस्पताल में इलाज कराते दिख रहे हैं। वहीं, खुजस्तान प्रांत पर हमले में 7 लोगों की मौत हो गई,जबकि 8 लोग घायल हुए। हालांकि अमेरिका का दावा है कि उन्होंने ईरान के सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया है। इन हमलों के जवाब में ईरान ने जॉर्डन और बहरीन में अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने का दावा किया है। इसमें कई लोगों मारे गए हैं। अमेरिकी नौसेना का विमानवाहक पोत यूएसएस अब्राहम लिंकन बुधवार को थाईलैंड पहुंचा। यह युद्धपोत 200 दिनों से ज्यादा समय तक लगातार समुद्र में रहने के बाद पांच दिन के आराम के लिए यहां रुका है। इस पोत पर करीब 5,000 सैनिक और कर्मचारी तैनात हैं। यह पश्चिम एशिया में ईरान से जुड़े मिशन पर था। लंबे समय तक समुद्र में रहने के कारण जहाज पर तैनात लोगों को किसी बंदरगाह पर रुकने का मौका नहीं मिला। इसी वजह से उनके मानसिक स्वास्थ्य और रहने की परिस्थितियों को लेकर भी चिंता जताई गई है।

ईरान ने दावा किया है कि खुजस्तान प्रांत में अमेरिकी मिसाइल हमले में 7 लोगों की मौत हो गई,जबकि 8 घायल हुए हैं। अमेरिका ने प्रांत में 3 जगहों को निशाना बनाया। रूस कथित तौर पर ईरान को सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल बनाने की तकनीक गुप्त रूप से दे रहा है।

छत्तीसगढ़ बीजेपी ने 15 प्रकोष्ठों में तय किए चेहरे

चुन्नीलाल साहू को बड़ी जिम्मेदारी, लाभचंद बाफना भी बनाए गए सहसंयोजक

रायपुर,02 सितंबर 2026। छत्तीसगढ़ भाजपा ने संगठन को मजबूत करने की दिशा में एक और कदम उठाते हुए प्रदेश के 15 प्रकोष्ठों के लिए पदाधिकारियों की नियुक्ति की है। पार्टी ने अलग-अलग प्रकोष्ठों में संयोजक, सहसंयोजक और प्रभारी की जिम्मेदारियां तय की है। प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव की सहमति के बाद नियुक्तियों की सूची जारी की गई है। भाजपा प्रदेश मुख्यालय प्रभारी डॉ. नवीन मार्कण्डेय की ओर से नियुक्ति संबंधी आदेश जारी किया गया। नई जिम्मेदारियां मिलने के बाद संबंधित पदाधिकारी अपने-अपने प्रकोष्ठों में संगठनात्मक गतिविधियों को आगे बढ़ाएंगे। भाजपा में प्रकोष्ठों की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। इनके जरिए समाज के अलग-अलग वर्गों, व्यवसायों और क्षेत्रों से जुड़े लोगों तक पार्टी की नीतियों और कार्यक्रमों को पहुंचाया जाता है।

चुन्नीलाल साहू को प्रकोष्ठ संकुल संयोजक बनाया : जारी सूची में पूर्व सांसद चुन्नीलाल साहू को प्रकोष्ठ संकुल संयोजक की जिम्मेदारी दी गई है। वहीं लाभचंद बाफना को प्रकोष्ठ संकुल सहसंयोजक बनाया गया है। दोनों नेताओं को अलग-अलग प्रकोष्ठों के बीच समन्वय और संगठनात्मक गतिविधियों को गति देने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलेगी।

15 प्रकोष्ठों में नई जिम्मेदारियां : भाजपा ने कुल 15 प्रकोष्ठों के लिए पदाधिकारियों की घोषणा की है। इनमें अलग-अलग सामाजिक और व्यावसायिक समूहों से जुड़े प्रकोष्ठ शामिल हैं। पार्टी का फोकस इन प्रकोष्ठों के जरिए समाज के विभिन्न वर्गों तक संगठन की पहुंच बढ़ाने पर है। भाजपा लगातार बूथ से लेकर प्रदेश स्तर तक संगठन को सक्रिय करने पर जोर दे रही है। ऐसे में प्रकोष्ठों में नई नियुक्तियों को संगठन विस्तार की रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है।

तमिलनाडु के 52 मंदिरों में स्मार्टफोन बैन: परिसर में सेल्फी और रील पर पाबंदी,वीआईपी पर भी लागू होंगे नियम

चेन्नई,02 सितंबर 2026। तमिलनाडु सरकार ने राज्य के 52 प्रमुख मंदिरों में स्मार्टफोन ले जाने और इस्तेमाल करने पर रोक लगा दी है। यह नियम मंगलवार से लागू हुआ है। नए नियम के मुताबिक, श्रद्धालुओं को मंदिर में प्रवेश से पहले स्मार्टफोन काउंटर पर जमा करना होगा। इसके लिए हर फोन पर 5 रुपए चार्ज देना होगा। बिना कैमरे वाले मोबाइल फोन मंदिर के अंदर ले जाने की अनुमति होगी। मंदिर परिसर में फोटो खींचने, रील बनाने और वीडियो रिकॉर्ड करने पर रोक लगा दी गई है। इस नियम के तहत वीआईपी, बड़ी हस्तियों और मशहूर लोगों की फोटो या वीडियो बनाने की भी इजाजत नहीं होगी। हिंदू रिलीजियस एंड चैरिटेबल एंडोमेंट्स मंत्री रमेश ने यह जानकारी दी। यह फैसला 2 दिसंबर 2022 को मद्रास हाईकोर्ट की मदुरै बेंच के आदेश के आधार पर जारी किए गए हैं। मंदिर परिसरों में श्रद्धालुओं,खासकर युवाओं द्वारा फोटो खींचने,रील बनाने और वीडियो रिकॉर्ड करने को लेकर लगातार चिंताएं जताई जा रही थीं। मंत्री ने कहा कि जिन मोबाइल फोन में कैमरा नहीं है, उन्हें मंदिर के अंदर ले जाने की अनुमति होगी। नए नियम का उद्देश्य मंदिरों की पवित्रता और शांतिपूर्ण माहौल बनाए रखना है।

कांचीपुरम के प्रसिद्ध देवराजस्वामी-अथि वरदार मंदिर में मंगलवार सुबह 6 बजे से यह व्यवस्था शुरू कर दी गई। यहां फोन जमा करने के लिए दो कंप्यूटर ऑपरेटर और दो कर्मचारी तैनात किए गए हैं।

हाईकोर्ट ने तिरुचेंदूर के अरुलमिगु सुब्रमण्यम स्वामी मंदिर में स्मार्टफोन के इस्तेमाल पर रोक लगाने की मांग वाली जनहित याचिका पर सुनवाई के बाद यह आदेश दिया था। इससे पहले भी मंदिरों को मोबाइल फोन ले जाने पर रोक लगाने और उन्हें सुरक्षित रखने की व्यवस्था करने के निर्देश दिए गए थे। मंदिर अधिकारियों को प्रवेश द्वार और मंदिर परिसर के बाहर मोबाइल फोन के इस्तेमाल पर रोक की जानकारी देने वाले बोर्ड लगाने के निर्देश दिए गए हैं। लाउडस्पीकर के जरिए भी श्रद्धालुओं को इस नियम की जानकारी देने को कहा गया है।

राजनांदगांव में स्कॉर्पियो-बाइक की टक्कर,भाई-बहन समेत 4 की मौत

राजनांदगांव,02 सितंबर 2026। छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले में सड़क हादसे में 3 सगे भाई-बहनों समेत 4 लोगों की मौत हो गई। मंगलवार को भाई-बहन त्योहार की शॉपिंग करने छुरिया गए थे। शाम को बाइक से अपने गांव गहिराभेड़ी लौट रहे थे,तभी शिकारीमहका-भोलापुर मार्ग पर सामने से आ रही तेज रफ्तार स्कॉर्पियो से उनकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बाइक के परखच्चे उड़ गए। स्कॉर्पियो भी सड़क किनारे खेत में पलट गई। स्कॉर्पियो सवार एक बुजुर्ग ने भी दम तोड़ दिया। मामला छुरिया थाना क्षेत्र का है। मृतकों में दोनों बहनें शादीशुदा थीं, त्योहार मनाने घर आई हुई थी, भाई उन्हें शॉपिंग कराने लेकर गया था। पुलिस के मुताबिक, हादसे की वजह अंधेरा और तेज रफ्तार मानी जा रही है। जानकारी के अनुसार, ग्राम गहिराभेड़ी निवासी संदीप साहू (19) खेती की काम देखता था। भारती (भूपेश्वरी) और टिकेश्वरी (डीकेश्वरी) दोनों बहनें शादीशुदा थी। त्योहार में घर आई हुई थी। 1 सितंबर को तीनों त्योहार की खरीदारी करने छुरिया गए हुए थे। शाम को बाइक पर सवार होकर गांव लौट रहे थे। इस दौरान तेज रफ्तार स्कॉर्पियो भोलापुर से छुरिया जा रही थी। शाम करीब 7 बजे नहर के पास स्कॉर्पियो ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी।

नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विकास की नई इबारत लिख रहा छत्तीसगढ़ : उपराष्ट्रपति

रायपुर,02 सितंबर 2026। छत्तीसगढ़ नक्सलवाद, भय और अभाव के साये से निकलकर आज शांति, प्रगति और अवसरों के नए दौर में प्रवेश कर चुका है, जो क्षेत्र कभी हिंसा के लिए जाने जाते थे, वहां आज सड़कें,स्कूल,अस्पताल,कनेक्टिविटी और निवेश पहुंच रहे हैं। यह बात उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन ने बुधवार को यहां अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के तीसरे दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कही। उपराष्ट्रपति ने एम्स रायपुर को राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं के ऐतिहासिक परिवर्तन का एक प्रमुख प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि,उन्नत स्वास्थ्य देखभाल, चिकित्सा अनुसंधान और ट्रांसप्लांटेशन के क्षेत्र में संस्थान की उपलब्धियां सराहनीय हैं, जिनमें राज्य का पहला 'स्वैप किडनी ट्रांसप्लांट' भी शामिल है। उन्होंने कहा कि हृदय प्रत्यारोपण कार्यक्रम की मंजूरी एक और महत्वपूर्ण सफलता है। समारोह के दौरान उपराष्ट्रपति ने विभिन्न संकायों के मेधावी छात्र-छात्राओं को उनकी उत्कृष्ट शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए स्वर्ण पदक और प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। मध्य भारत के इस प्रतिष्ठित संस्थान में आयोजित समारोह में स्नातक (यूजी),स्नातकोत्तर (पीजी), सुपर-स्पेशियलिटी,डॉक्टरेट और संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान पाठ्यक्रमों के कुल 689 विद्यार्थियों (376 छात्राएं और 313 छात्र) को डिग्रियां प्रदान की गईं। दीक्षांत समारोह के मुख्य आकर्षणों में 'से नो टू ड्रग्स' (नशे को ना कहें) की शपथ भी शामिल रही, जिसके तहत उपस्थित सभी विद्यार्थियों को स्वयं नशीले पदार्थों के सेवन से दूर रहने और अपने साथियों व समाज में इसके दुष्प्रभावों व खतरों के प्रति व्यापक जागरूकता फैलाने का संकल्प दिलाया गया। समारोह को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि,यह दीक्षांत समारोह केवल उत्सव का क्षण नहीं है बल्कि जिम्मेदारी का भी अवसर है। उन्होंने कहा,'आज आपको आपकी डिग्रियां मिल रही हैं और कल आपको इससे कहीं अधिक मूल्यवान जिम्मेदारी सौंपी जाएगी-भारत की जनता का स्वास्थ्य, विश्वास और जीवन।'

इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका,केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल, राज्य के स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल और रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल उपस्थित रहे। वहीं, एम्स रायपुर की ओर से अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) संजीव हांडा तथा कार्यकारी निदेशक सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल अशोक जिंदल भी मंच पर मौजूद रहे।

संपादकीय

अति की हदों को पार करती असहमति

इस वित्त वर्ष की पहली तिमाही की जीडीपी विकास दर 7.8 प्रतिशत रहने पर प्रधानमंत्री मोदी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए जब यह कहा कि वैश्विक अनिश्चितताओं और चुनौतियों के बावजूद यह वृद्धि देश के लोगों की सामूहिक शक्ति और आर्थिक आत्मविश्वास का परिणाम है तो कांग्रेस को यह बिल्कुल रास नहीं आया। उसने अर्थव्यवस्था की तमाम कमजोरियों का उल्लेख करते हुए मोदी सरकार को निशाने पर लिया। ऐसा नहीं है कि आर्थिक मोर्चे पर किसी तरह की समस्याएं नहीं हैं, लेकिन कांग्रेस का उद्देश्य उन्हें गिनाना नहीं,बल्कि यह सिद्ध करना था कि जीडीपी में वृद्धि किसी तरह की उपलब्धि नहीं है। उसने यह काम पूरी शिद्दत से किया और इसके लिए कई प्रवक्ताओं को मैदान में उतारा। निःसंदेह किसी को यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि विपक्ष सरकार की प्रशंसा करेगा।
विपक्ष का काम सरकार की खामियों को इंगित करना और उसकी गलतियों के लिए उसे कठघरे में खड़ा करना है। इससे ही सरकारों पर दबाव बनता है और वे सही तरह काम करने के लिए बाध्य होती हैं, लेकिन पिछले लगभग दो दशकों से असहमति की राजनीति अपनी हदों को पार कर विरोध के लिए विरोध की राजनीति में बदल चुकी है।
विरोध के लिए विरोध की राजनीति के चलते आज राजनीतिक माहौल इतना कटुतापूर्ण,छिद्रान्वेषी और नकारात्मक हो गया है कि यदि कोई नेता ऐसा कुछ कह दे कि नियमों का पालन करें और संयम एवं अनुशासन का परिचय दें तो विरोधी दल के नेता इसका भी विरोध करने के लिए आगे आ सकते हैं। इसके लिए उनके पास तरह-तरह के (कु)तर्क भी होंगे। कटु एवं नकारात्मक राजनीतिक विमर्श का असर सामाजिक विमर्श पर भी पड़ रहा है।

यह एक तथ्य है कि सोशल मीडिया कहे जाने वाले डिजिटल प्लेटफार्मों पर विचार-विमर्श का स्थान गाली-गलौज ने ले लिया है। इसका कारण यह है कि राजनीतिक दलों के आइटी सेल विरोधी दलों के नेताओं पर प्रायः बिलो द बेल्ट यानी अपमानजनक प्रहार करते ही रहते हैं। अब ऐसे प्रहार करने के लिए एआइ का भी सहारा लिया जा रहा है। कई बार इसकी चपेट में महिला नेता भी आ जाती हैं। इसके नतीजे में राजनीतिक और सामाजिक माहौल बुरी तरह दूषित हो रहा है। इस प्रदूषण के दूर होने की कोई सूरत नहीं दिखती। कटुतापूर्ण राजनीति ने महापुरुषों को भी बांट दिया है। अब राजनीति और समाज के स्तर पर लोग किसी राष्ट्रीय दायित्व या अभियान के प्रति कठिनाई से ही एकमत और एकजुट होते दिखते हैं,जबकि देश की कई समस्याएं ऐसी हैं, जिन्हें लोगों की सामूहिक भागीदारी से ही दूर किया जा सकता है, जैसे सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी से मुक्ति।
आज स्वच्छ भारत जैसे अभियान असरहीन होते दिख रहे हैं तो इसीलिए कि इस अभियान में आम जनता की पहली जैसी भागीदारी नहीं दिखती। जब यह अभियान शुरू हुआ था तो आम लोगों की इसमें दिलचस्पी और भागीदारी दिख रही थी कि सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी न फैले, लेकिन अब वह दिखाई नहीं देती। यह एक ऐसा अभियान है, जो आम जनता की भागीदारी के बिना सफल नहीं हो सकता। यदि लोग सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलने से रोकने के लिए सक्रिय-सचेत नहीं रहते तो सरकारें और उनकी एजेंसियां कुछ भी कर लें,बात बनने वाली नहीं है।
विडंबना यह है कि जब से यह अभियान शुरू हुआ,तबसे शायद ही किसी विपक्षी नेता ने इसे सफल बनाने में अपने लोगों को भागीदार बनने के लिए प्रेरित किया हो। कुछ ऐसी ही स्थिति बेटी बचाओ,बेटी पढ़ाओ जैसे अभियानों की भी है। विरोधी राजनीतिक दलों को लगता है कि जिस दल ने इन अभियानों को शुरू किया,उनके लोगों को ही इनमें भागीदार बनने की आवश्यकता है। शायद यही कारण है कि हर घर तिरंगा जैसे अभियानों में भी सभी राजनीतिक दलों की भागीदारी नहीं दिखती। इसमें गहन संदेह है कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विरोधी राजनीतिक दल किसी तरह का उत्साह-उमंग दिखाते होंगे। हैरानी नहीं कि मोदी सरकार के हटते ही इस दिवस को मनाना ही बंद कर दिया जाए।

यह एक तथ्य है कि जनभागीदारी वाले कई सामाजिक अभियान महज मोदी सरकार के अभियान बनकर रह गए हैं। यह स्थिति तब है,जब देश में कई समस्याएं ऐसी हैं, जिनका समाधान जनता की सामूहिक भागीदारी से ही किया जा सकता है। संकट यह है कि अब राजनीतिक दल किसी भी मुद्दे पर एकमत नहीं होते-न तो संसद में और न ही संसद के बाहर। हालांकि इसके लिए राष्ट्रीय एकता परिषद के रूप में एक मंच है, लेकिन वह लंबे समय से निष्क्रिय है। यह सही समय है कि इस निष्क्रिय मंच को सक्रिय किया जाए। राष्ट्रीय एकता परिषद एक गैर-संवैधानिक निकाय है। इस परिषद के अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं।
इसके सदस्यों में सभी मुख्यमंत्री,राजनीतिक दलों के नेता, विभिन्न आयोगों के अध्यक्ष,उद्योग,व्यापार,मीडिया और श्रमिक संघों के प्रतिनिधि होते हैं। इसकी स्थापना 1961 में की गई थी। कहीं यह मंच इसलिए तो निष्क्रिय नहीं कि इसकी स्थापना प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने की थी? जो भी हो, यह ध्यान रहे कि इस परिषद का उद्देश्य सांप्रदायिकता,जातिवाद, क्षेत्रवाद,भाषावाद और संकीर्णता जैसी समस्याओं का सामना करना था। कोई इससे इन्कार नहीं कर सकता कि इन समस्याओं का सामना करने की आवश्यकता आज भी है और इसकी पूर्ति सबके सहयोग से ही संभव है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : आस्था आत्मबोध और जीवन प्रबंधन

योगेश्वर के शाश्वत संदेश का वास्तविक उत्सव

हेमेन्द्र क्षीरसागर
बालाघाट, मध्यप्रदेश

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी केवल भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव का पर्व नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन की उस विराट चेतना का उत्सव है,जो मनुष्य को धर्म,कर्म,प्रेम,विवेक,साहस और लोक कल्याण का मार्ग दिखाती है। भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाया जाने वाला यह पर्व आध्यात्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक समरसता, नैतिक जीवन और व्यवहारिक बुद्धिमत्ता का भी संदेश देता है।
श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व जितना आध्यात्मिक है,उतना ही व्यावहारिक भी। वे एक ओर योगेश्वर हैं तो दूसरी ओर मित्र,मार्गदर्शक,कूट नीतिज्ञ,कुशल नेतृत्वकर्ता और जन सामान्य के जीवन से गहराई से जुड़े लोकनायक भी हैं।

अंधकार में प्रकाश का संदेश

श्रीकृष्ण का जन्म कारागार में हुआ। चारों ओर भय, अत्याचार और अन्याय का

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

वातावरण था, लेकिन उसी अंधकार के बीच आशा का प्रकाश प्रकट हुआ। यह प्रसंग हमें यह विश्वास देता है कि परिस्थितियां कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों,सत्य और धर्म की शक्ति अंततः अपना मार्ग बनाती है। आज जब समाज विभिन्न प्रकार की चुनौतियों, तनाव, अविश्वास और मूल्य-संकट से गुजर रहा है, तब जन्माष्टमी हमें निराशा के स्थान पर आशा,भय के स्थान पर साहस और नकारात्मकता के स्थान पर सकारात्मक कर्म का संकल्प लेने की प्रेरणा देती है।

कर्म ही जीवन का आधार

भगवान श्रीकृष्ण का सबसे व्यापक संदेश निष्काम कर्म है। श्रीमद्भगवद्गीता में वे अर्जुन को कर्म करने और फल की चिंता से मुक्त रहने का मार्ग बताते हैं। इसका अर्थ कर्म के परिणाम की उपेक्षा करना नहीं,बल्कि अपने कर्तव्य को पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निभाना है। आज के जीवन में यह संदेश अत्यंत उपयोगी है। विद्यार्थी पढ़ाई में, किसान खेती में, कर्मचारी अपने दायित्व में,व्यापारी व्यवसाय में और जनप्रतिनिधि जनसेवा में यदि पूरी ईमानदारी से कर्म करें, तो व्यक्तिगत सफलता के साथ समाज की प्रगति भी सुनिश्चित हो सकती है।

प्रेम और व्यवहार में संतुलन

श्रीकृष्ण का जीवन प्रेम की अनेक अभिव्यक्तियों से जुड़ा है। माता यशोदा का वात्सल्य,सखा-संबंधों की आत्मीयता,राधा-कृष्ण की प्रेम चेतना और सुदामा के साथ उनकी मित्रता—ये सभी रिश्तों की गरिमा और संवेदनशीलता का संदेश देते हैं। विशेष रूप से सुदामा प्रसंग आज के भौतिकतावादी समय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सच्ची मित्रता पद, प्रतिष्ठा और संपत्ति नहीं देखती। श्रीकृष्ण ने सुदामा के प्रति जिस आत्मीयता का परिचय दिया,वह बताती है कि मनुष्य की वास्तविक समृद्धि उसके संबंधों और संवेदनाओं में निहित होती है।

नेतृत्व की अद्भुत कला

श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व कुशल नेतृत्व का भी उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने परिस्थितियों के अनुसार रणनीति बनाई, संवाद को महत्व दिया और आवश्यकता पड़ने पर कठिन निर्णय लेने से भी पीछे नहीं हटे। महाभारत में उनका सबसे बड़ा योगदान केवल युद्ध की रणनीति नहीं, बल्कि धर्म और अधर्म के बीच स्पष्ट विवेक स्थापित करना था। आज सार्वजनिक जीवन,प्रशासन, सामाजिक संस्थाओं और परिवार तक—हर क्षेत्र में ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता है जो लोकप्रिय होने के बजाय सही निर्णय लेने का साहस रखता हो।

तनावपूर्ण जीवन में गीता

आज मनुष्य के पास सुविधाएं बढ़ी हैं, लेकिन मानसिक शांति का संकट भी बढ़ा है। प्रतिस्पर्धा,अपेक्षाएं,असफलता का भय और भविष्य की चिंता जीवन को तनावपूर्ण बना रही है। ऐसे समय में श्रीकृष्ण का गीता संदेश मनुष्य को भीतर से स्थिर रहने की प्रेरणा देता है। परिस्थितियां हमारे नियंत्रण में हमेशा नहीं होतीं, लेकिन परिस्थितियों के प्रति हमारा दृष्टिकोण और हमारा कर्म हमारे हाथ में होता है। यही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की सार्थकता है और योगेश्वर श्रीकृष्ण के शाश्वत संदेश का वास्तविक उत्सव भी।

श्राद्धकर्म है पितरों के प्रति श्रद्धा-कृतज्ञता की अभिव्यक्ति

आत्माराम यादव
नर्मदापुरम,मध्यप्रदेश

मृत्यु के साथ जीवन समाप्त नहीं होता तभी भारतीय संस्कृति में मृत्यु को अनन्त जीवन श्रृंखला की एक कड़ी के रूप में स्वीकारा है,इसलिए संस्कारों के क्रम में जीव की उस स्थिति को भी बाँधा गया है, जब वह एक जन्म पूरा करके अगले जीवन की ओर उन्मुख होता है। जीवात्मा का अगला जीवन पिछले की अपेक्षा अधिक सुसंस्कारवान् बने,इस हेतु कर्मकाण्ड में धर्मसूत्रों की व्याख्या में गुरु वशिष्ठ ने श्राद्धकर्म को पितरों के प्रति श्रद्धा-कृतज्ञता की अभिव्यक्ति हेतु व्यवस्था दी है ताकि हम ओर आप दिवंगत अपने स्वजन माता-पिता,बाबा-परबाबा,दादी,परदादी,पत्नी,पुत्र,पुत्री, चाचा,नाना,परनाना,भाई,बुआ,मौसी,सास-ससुर एवं गुरु-गुरु पत्नी, शिष्य एवं मित्रगण की जीवात्मा के कल्याण की भावना से श्राद्धकर्म द्वारा तृप्त कर सके। इस दृश्य संसार में स्थूल शरीर वालों को जिस इन्द्रिय भोग,वासना, तृष्णा एवं अहंकार की पूर्ति में सुख मिलता है,उसी प्रकार पितरों का सूक्ष्म शरीर शुभ कर्मों से उत्पन्न सुगन्ध का रसास्वादन करते हुए तृप्ति अनुभव करता है। उनकी प्रसन्नता तथा आकांक्षा का केन्द्र बिन्दु श्रद्धा है। श्रद्धा भरे वातावरण के सानिध्य में पितर अपनी अशान्ति खोकर आनन्द का अनुभव करते हैं। श्रद्धा ही उनकी भूख है, इसी से उन्हें तृप्ति होती है। इसलिए पितरों की प्रसन्नता के लिए श्राद्ध एवं तर्पण आवश्यक हैं। पितर वे हैं,जो पिछला शरीर त्याग चुके;किन्तु अगला शरीर अभी प्राप्त नहीं कर सके। इस मध्यवर्ती स्थिति में रहते हुए वे अपना स्तर मनुष्यों जैसा ही अनुभव करते हैं।

गीता के आठवे वें अध्याय में कहा भगवान कृष्ण ने ब्रम्ह ओर जीव का विवेचन करते हुये श्लोक पाँच में कहा है...**अंतकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम। य प्रयाति स मदभांव याति नास्त्येत संसश ॥** अर्थात है...हे अर्जुन ! जो अन्त समय में जिन भावों का स्मरण करता हुआ देह छोड़ता है,उन्हीं भावों से अनुप्राणित होकर वैसा ही नया शरीर, नया व्यक्तित्व प्राप्त करता है। संसार एक समुद्र के समान है, जिसमें जलकणों की भाँति हर एक जीव है। विश्व एक शिला है,तो व्यक्ति एक परमाणु । जीवित या मृत आत्मा इस विश्व में मौजूद है और अन्य समस्त

आत्माओं से सम्बद्ध है। संसार में कहीं भी अनीति, युद्ध, कष्ट,अनाचार,अत्याचार हो रहे हों,तो सुदूर देशों के निवासियों के मन में भी उद्वेग उत्पन्न होता है। जाडे और गर्मी के मौसम में हर एक वस्तु ठण्डी और गर्म हो जाती है। छोटा सा यज्ञ करने पर भी उसकी दिव्यगन्ध व भावना समस्त संसार के प्राणियों को लाभ पहुँचाती है। इसी प्रकार कृतज्ञता की भावना प्रकट करने के लिए किया हुआ श्राद्ध समस्त प्राणियों में शान्तिमयी से द्भावना की लहरें पहुँचाता हैं। यह सूक्ष्म भाव तरंगे तृप्तिकारक और आनन्ददायक होती हैं। सद्भावना की तरंगें जीवित-मृत सभी को तृप्त करती हैं,परन्तु अधिकांश भाग उन्हीं को पहुँचता है, जिनके लिये वह श्राद्ध विशेष प्रकार से किया गया है। मुक्त आत्माओं और पितरों के प्रति मनुष्यों को वैसा ही श्रद्धाभाव दृढ़ रखना चाहिए,जैसा देवों-प्रजापतियों तथा परमात्म-सत्ता के प्रति। मुक्तों,देवों,प्रजापतियों एवं ब्रह्म को तो मनुष्यों की किसी सहायता की आवश्यकता नहीं होती किन्तु पितरों को ऐसी आवश्यकता होती है इसीलिए मनीषी-पूर्वजों ने पितर-पूजन,श्राद्ध-कर्म की परम्परायें प्रचलित की थीं। उनकी सही विधि और उनमें सन्निहित प्रेरणा को जानकर पितरों को सच्ची भावना श्रद्धांजलि अर्पित करने पर वे प्रसन्न पितर बदले में प्रकाश,प्रेरणा,शक्ति और सहयोग देते हैं। पितरों को स्थूल सहायता की नहीं,सूक्ष्म भावात्मक सहायता की ही आवश्यकता होती है। क्योंकि वे सूक्ष्म शरीर में ही अवस्थित होते हैं। इस दृष्टि से मृत्यु के पश्चात् पितृपक्ष में, मृत्यु की तिथि के दिन अथवा पर्व-समारोहों पर श्राद्ध कर्म करने का विधान देव-संस्कृति में है।

शास्त्रों की तर्पण व्यवस्था के अनुसार श्राद्ध प्रक्रिया में देव तर्पण,ऋषि तर्पण,दिव्य मानव तर्पण, दिव्य पितृ तर्पण,यम तर्पण,मनुष्य पितृ तर्पण नाम से 6 तर्पण कृत्य किये जाते हैं। इन सबके पीछे भिन्न-भिन्न दार्शनिक पृष्ठभूमि है। देव तर्पण अर्थात् ईश्वर की उन सभी महान् विभूतियों के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति जो मानव कल्याण हेतु निःस्वार्थ भाव से प्रयत्नरत हैं। वायु,सूर्य,अग्नि,चन्द्र, विद्युत् एवं अवतारी ईश्वर अंशों की मुक्त आत्माएँ इसके अन्तर्गत आती हैं। ऋषि तर्पण व्यास,वशिष्ठ,याज्ञवल्क्य,कात्यायन,जमदग्नि,अत्रि, गौतम,विश्वामित्र,नारद,चरक,सुश्रुत,पाणिनि,दधीचि आदि ऋषियों के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति के निमित्त किया जाता है। दिव्य मानव तर्पण अर्थात् उनके प्रति अपनी कृतज्ञता की अभिव्यक्ति,जो लोकमंगल के प्रति समर्पित हो,त्यागी जीवन जिए एवं विश्वमानव के लिये प्राणोत्सर्ग कर गए। दिव्य पितृ वे,जो कोई बड़ी लोकसेवा तो न कर सके,पर व्यक्तिगत रूप से आदर्शवादी जीवन जी कर अनुकरणीय पवित्र सम्पत्ति अपने पीछे छोड़ गए। यम अर्थात् जन्म मरण का नियंत्रण करने वाली शक्ति। कुमार्ग पर चलने से रोक लगाने वाली विवेक शक्ति ही यम है। इसकी निरन्तर पुष्टि होती रहे, मुत्यु का भाव बना रहे, इसलिये यमतर्पण किया जाता है।

शरीर के नष्ट हो जाने पर भी जीव का अस्तित्व नहीं मिटता। वह सूक्ष्म रूप में हमारे चारों ओर वातावरण में घूमते रहते हैं। जीव का फिर भी अपने परिवार के प्रति कुछ-न-कुछ ममत्व रह जाता है। सूक्ष्म आत्मायें आसानी से सब लोकों से आकर हमारे चारों ओर चक्कर लगाया करती हैं। हमारे विचार और भावनायें इस सूक्ष्म वातावरण में फैलते हैं। इन्हें हम जिस तेजी से बाहर के वातावरण में फेंकते हैं, ये उसी गति से दूर-दूर फैल जाते हैं। अतः श्राद्ध में किए गए पूर्वजों के प्रति हमारे आत्मीय,सद्भावना, कृतज्ञता के भाव उन आत्माओं के पास पहुँच जाते हैं। उसे उनसे सुख शान्ति,प्रसन्नता और स्वस्थता मिलती है। श्राद्ध में हविष्यान्न पिण्डों के द्वारा श्रद्धाभिव्यक्ति की जाती है। ये पिण्ड साधन-दान के प्रतीक होते हैं। स्वर्गस्थ आत्माओं की तृप्ति के लिए तर्पण किया जाता है। जल की एक अंजलि भरकर कृतज्ञता के भाव से भरकर हम स्वर्गीय पितृ-देवताओं के चरणों में उसे अर्पित कर देते हैं। इस प्रकार श्रद्धा, प्रेम,कृतज्ञता,अभिनन्दन सभी का मिश्रित रूप श्राद्ध है। योगवासिष्ठ के अनुसार मरने के समय प्रत्येक जीव मूर्छा का अनुभव करता है। वह मूर्छा महाप्रलय की रात्रि के समान होती है। उसके उपरान्त प्रत्येक व्यक्ति स्वयं ही अपने स्वप्न और संकल्प के अनुसार अपने परलोक की सृष्टि करता है, यह बात इन श्लोकों में कही गयी है:- **मरणादिमयी मूर्च्छा प्रत्येकेनानुभूयते । यैषा तां विद्धि सुमते महाप्रलययामिनीम् ।। तदन्ते तनुते सर्ग सर्व एव पृथक् पृथक् । सहज स्वप्नसंकल्पान्संभ्रमाचल नृत्यवत् ।।- योगवासिष्ठ 3/40/31व 32 इसी सन्दर्भ में आगे बताया गया है कि- स्ववासनानुसारेण प्रेता एतां व्यवस्थितम् । मूर्छान्तेऽनुभवन्त्यन्तः क्रमेणैवाक्रमेण च।।** अर्थात् प्रेत अपनी-अपनी वासना के अनुसार ही भावनात्मक उतार-चढ़ावों का अनुभव करते हैं। मरे हुए व्यक्ति की प्रेतावस्था में जिन लोगों से आसक्ति जुड़ी रहती है,उनकी भाव संवेदनायें और उनकी परिस्थितियाँ-मन स्थितियाँ प्रेतों को तीव्रता से प्रभावित करती हैं।

पिण्डदान और श्राद्ध कर्म का महत्त्व यही है कि उन क्रियाओं के साथ-साथ जो भावनायें जुड़ी होती हैं वे प्रेतों-पितरों को स्पर्श करती हैं। इसी प्रकार पितरों के संस्कारों के अनुभव अपने प्रियपात्रों की स्थितियाँ उन्हें आन्दोलित करती हैं। योगवासिष्ठ में बताया गया है कि मृत्यु के उपरान्त प्रेत यानी मरे हुए जीव अपने बन्धु बान्धवों के पिण्डदान द्वारा ही अपना शरीर बना हुआ अनुभव करते हैं:-**आदौ मृता वयमिति बुध्यन्ते तदनुक्रमात्। बंधु पिण्डादिदानेन प्रोत्पन्ना इति वेदिनः ।।** अर्थात् प्रेत अपनी स्थिति इस प्रकार अनुभव करते हैं कि हम मर गये हैं और अब बन्धुओं के पिण्डदान से हमारा नया शरीर बना है। स्पष्ट है कि यह अनुभूति भावनात्मक ही होती है। अतः पिण्डदान का वास्तविक महत्त्व उससे जुड़ी भावनाओं के कारण होता है। जिसके प्रति आत्मीयता होती है,उसके भावनात्मक अनुदान से प्रेत प्रभावित होता है। क्योंकि मरणोत्तर जीवन की अनुभूतियाँ वासना और संस्कारों के प्रभाव की ही प्रतिच्छाया होती हैं। इसलिए जिससे आत्मीयता का संस्कार अंकित हो, उसकी भावनायें परलोकस्थ जीव को प्रभावित करती हैं।

श्राद्ध तर्पण की सार्वभौम व्यवस्था में सारे समुदाय के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति समाहित है। यह मात्र कर्मकाण्ड तक सीमित न रहकर व्यवहार में उतरे,वसुधा एक विराट् परिवार है,इस भावना के रूप में साकार हो, उदार दानशीलता के रूप में लोकमंगल के कार्य बन पड़ें, तो ही इनकी सार्थकता है। पितृपक्ष का हिन्दू धर्म एवं संस्कृति में विशेष माहात्म्य है।

ऐश्वर्य एवं वैराग्य का अद्भुत संगम है श्रीकृष्ण

ललित गर्ग
पटपड़गंज,नई दिल्ली

भगवान श्रीकृष्ण भारत की माटी, भारत की आत्मा और भारत के जनजीवन की धे कन हैं। वे केवल आराधना के देवता नहीं, बल्कि जीवन को देखने की एक दृष्टि, संघर्षों से जूझने की प्रेरणा और भविष्य की ओर बे ने की दिशा हैं। वे ऐश्वर्य एवं वैराग्य का अद्भुत एवं निराला संगम हैं। श्रीकृष्ण के बिना भारतीय जीवन-दर्शन की कल्पना अधूरी है। जीवन के लगभग प्रत्येक आयाम-परिवार, समाज,राजनीति,प्रशासन,अर्थव्यवस्था,युद्ध, शांति,प्रेम,मित्रता,कर्तव्य,त्याग,नेतृत्व और आध्यात्मिकता में श्रीकृष्ण के विचारों और आदर्शों की छाप दिखाई देती है। इसीलिए जन्माष्टमी केवल श्रीकृष्ण के जन्म का उत्सव नहीं, बल्कि उनके विचारों को जीवन में उतारने का अवसर है। श्रीकृष्ण भारतीय संस्कृति के ऐसे अद्भुत एवं विलक्षण महानायक हैं, जिनके व्यक्तित्व में विरोधाभास दिखाई देने वाले अनेक गुण एक साथ समाहित हो जाते हैं। वे द्वारका के शासक हैं, लेकिन उन्हें सामान्यतः'राजा श्रीकृष्ण' नहीं कहा जाता। वे ब्रजनंदन हैं,नंदलाल हैं, कन्हैया हैं, माखनचोर हैं,गोपियों के चितचोर हैं और रासरचैया हैं। यही उनकी महानता है कि सत्ता के शिखर पर पहुंचकर भी वे जनमानस से कभी दूर नहीं हुए। उनका नेतृत्व राजमहलों तक सीमित नहीं था,वह गांवों की गलियों, ग्वाल-बालों,किसानों,पशुपालकों और सामान्य जन के हृदय तक पहुंचता था।
श्रीकृष्ण का जीवन हमें सिखाता है कि श्रेष्ठ नेतृत्व केवल अधिकार प्राप्त करने का नाम नहीं, बल्कि जिम्मेदारी निभाने की कला है। उन्होंने सत्ता को कभी व्यक्तिगत सुख का साधन नहीं बनाया। समाज और राष्ट्र की व्यवस्था उनके लिए कर्तव्य थी और धर्म उनकी आत्मनिष्ठा। इसीलिए उन्होंने परिस्थितियों से पलायन नहीं किया। जहां प्रेम की आवश्यकता थी वहां प्रेम दिया,जहां मित्रता की आवश्यकता थी वहां मित्र बने,जहां संवाद जरूरी था वहां संवाद किया और जहां अधर्म का प्रतिकार आवश्यक हुआ वहां अत्यंत कठोर होकर सामने आए। यही संतुलन कुशल नेतृत्व की सबसे बे ी पहचान है। आज प्रबंधन की दुनिया में निर्णय क्षमता,समय-प्रबंधन,संकट-प्रबंधन,नेतृत्व,संवाद-कौशल, मनोविज्ञान और रणनीति को सफलता की अनिवार्य शर्त माना जाता है। इन सभी क्षेत्रों में श्रीकृष्ण का जीवन असाधारण उदाहरण प्रस्तुत करता है। कुरुक्षेत्र में अर्जुन जब मोह और मानसिक द्वंद्व से घिरकर अपने कर्तव्य से विमुख होने लगे,तब श्रीकृष्ण ने उन्हें केवल युद्ध के लिए प्रेरित नहीं किया,बल्कि जीवन का विराट दर्शन दिया। उन्होंने अर्जुन को कर्म का मर्म समझाया-मनुष्य का अधिकार कर्म पर है,परिणाम पर नहीं। यह संदेश आज भी हर विद्यार्थी,कर्मचारी, उद्यमी, प्रशासक,राजनीतिज्ञ और सामान्य व्यक्ति के लिए उतना ही उपयोगी है।

हमारी सबसे बे ी कमजोरी अक्सर कर्म से अधिक परिणाम की चिंता होती है। परिणाम की चिंता मन को भय,तनाव और असमंजस से भर देती है। श्रीकृष्ण का कर्मयोग इस मानसिक बोझ से मुक्ति का मार्ग देता है। अपने कर्तव्य को पूरी निष्ठा,क्षमता और ईमानदारी से करना और परिणाम को व्यापक व्यवस्था पर छो देना-यह जीवन-प्रबंधन का ऐसा सूत्र है जिसकी उपयोगिता कभी समाप्त नहीं हो सकती। श्रीकृष्ण की सबसे बे ी विशेषताओं में से एक थी-स्थिर बुद्धि। शिशुपाल ने राजसूय यज्ञ की सभा में उन्हें लगातार अपमानित किया, फिर भी वे शांत रहे। दुर्योधन के दरबार में शांति-दूत बनकर गए और वहां भी उनका अपमान हुआ,लेकिन वे विचलित

नहीं हुए। इससे हमें सीख मिलती है कि उत्तेजना में लिया गया निर्णय प्रायः समस्या बे ाता है,जबकि शांत मन समाधान का रास्ता खोलता है। आधुनिक परिवारों से लेकर संसद, प्रशासन और अंतरराष्ट्रीय संबंधों तक, यह प्रबंधन-सूत्र आज भी उतना ही प्रासंगिक है। श्रीकृष्ण केवल युद्धनीति के ज्ञाता नहीं थे,वे शांति के भी सबसे बे समर्थक थे। महाभारत का युद्ध उनकी पहली पसंद नहीं था। उन्होंने युद्ध रोकने के लिए हर संभव प्रयास किया। जब संवाद और न्याय की संभावनाएं समाप्त हो गईं, तभी धर्म की रक्षा के लिए युद्ध का मार्ग स्वीकार किया गया। इससे स्पष्ट होता है कि शक्ति का अर्थ हिंसा नहीं,बल्कि न्याय की रक्षा करने की क्षमता है। सच्ची शांति वही है जिसके पीछे न्याय और आत्मबल की शक्ति हो। श्रीकृष्ण का सामाजिक दृष्टिकोण भी अत्यंत व्यापक था। उन्होंने ग्रामीण जीवन, गौ-संस्कृति,प्रकृति और सामुदायिक जीवन को सम्मान दिया। गोवर्धन प्रसंग हमें प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और सामुदायिक एकता का संदेश देता है। माखन और दूध-दही के प्रसंगों को केवल बाल-क्री ा के रूप में देखने के बजाय उनमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था और स्थानीय संसाधनों की रक्षा का संदेश भी देखा जा सकता है। श्रीकृष्ण का लोकजीवन से जु ाव बताता है कि कोई भी राष्ट्र तभी मजबूत बन सकता है जब उसकी विकास-यात्रा गांवों,किसानों,श्रमिकों और सामान्य नागरिकों को साथ लेकर चले। उनका व्यक्तित्व एक अद्भुत समन्वय है। वे अर्जुन के सारथी हैं और साथ ही विश्वरूप के दर्शन कराने वाले योगेश्वर। वे सुदामा के मित्र हैं और अत्याचारियों के लिए सुदर्शन चक्रधारी। वे बांसुरी की मधुरता हैं तो धर्मरक्षा के लिए आवश्यक कठोरता भी। वे प्रेम हैं,करुणा हैं,नीति हैं,रणनीति हैं,त्याग हैं और कर्म हैं। इसीलिए श्रीकृष्ण को किसी एक सीमा में बांधना उनके विराट व्यक्तित्व को छोटा करना होगा।

श्रीकृष्ण का एक महत्वपूर्ण संदेश है कि व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का बहुआयामी विकास करना चाहिए। परंपरा में उनके द्वारा चौंसठ कलाओं के ज्ञान का उल्लेख मिलता है। इसका व्यापक संदेश यह है कि शिक्षा केवल रोजगार पाने का साधन नहीं,बल्कि व्यक्तित्व को पूर्ण बनाने की प्रक्रिया है। आज के समय में जब शिक्षा को केवल अंक,नौकरी और प्रतियोगिता तक सीमित करने का खतरा है, श्रीकृष्ण का जीवन हमें ज्ञान,कला,कौशल, सृजनशीलता और चरित्र के समन्वय की प्रेरणा देता है। श्रीकृष्ण की राजनीति सत्ता प्राप्ति की राजनीति नहीं,बल्कि लोककल्याण और धर्मस्थापना की राजनीति थी। उनके जीवन में हमें यह सूत्र मिलता है कि सत्ता पर नैतिकता का अंकुश होना चाहिए और शक्ति का उपयोग जनहित के लिए होना चाहिए। आज भारत विकसित भारत के 2047 के संकल्प के साथ आगे बे रहा है। आर्थिक शक्ति,विज्ञान, तकनीक,रक्षा,शिक्षा,संस्कृति और सामाजिक समरसता-हर क्षेत्र में भारत नई संभावनाओं की ओर बे रहा है। ऐसे समय में श्रीकृष्ण का दर्शन हमें बताता है कि विकास केवल भौतिक समृद्धि का नाम नहीं है। विकास तब सार्थक होगा जब उसमें चरित्र होगा,कर्तव्य होगा, करुणा होगी,न्याय होगा और अंतिम व्यक्ति के जीवन में भी आशा का प्रकाश पहुंचेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आत्मनिर्भर और सशक्त भारत के निर्माण की जो व्यापक यात्रा चल रही है,उसमें श्रीकृष्ण के कर्म, कर्तव्य,रणनीति,राष्ट्रहित और लोककल्याण के आदर्शों से प्रेरणा लेने की बे ी संभावनाएं हैं। अंतरराष्ट्रीय जीवन में भी श्रीकृष्ण का संदेश महत्वपूर्ण है। आज दुनिया संघर्षों,युद्धों, अविश्वास और शक्ति-संघर्षों से जूझ रही है। ऐसे समय में श्रीकृष्ण की नीति कहती है-पहले संवाद, फिर समन्वय और अंततः न्याय की रक्षा के लिए आवश्यक शक्ति। भारत यदि विश्व में शांति, सह-अस्तित्व और मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करना चाहता है तो उसे अपनी सांस्कृतिक चेतना के इस महान स्रोत से ऊर्जा लेनी होगी। श्रीकृष्ण हमें यह भी सिखाते हैं कि जीवन केवल सुख का नाम नहीं है। संघर्ष आएंगे,परिस्थितियां बदलेंगी, प्रियजन दूर होंगे,संकट सामने खे होंगे, लेकिन मनुष्य को अपने धर्म और कर्तव्य से विचलित नहीं होना चाहिए। यही कारण है कि गीता का संदेश किसी एक युग,धर्म या समुदाय के लिए नहीं, बल्कि समूची मानवता के लिए जीवन का मार्गदर्शन बन गया है।
जन्माष्टमी के अवसर पर हमें केवल मंदिरों में घंटियां नहीं बजानी हैं,बल्कि अपने भीतर के अंधकार को भी पहचानना है। हमारे भीतर का कंस अहंकार हो सकता है,लोभ हो सकता है, क्रोध हो सकता है,भय हो सकता है और स्वार्थ भी। हमारे भीतर का अर्जुन भ्रमित और कमजोर हो सकता है। ऐसे में हमें अपने भीतर के श्रीकृष्ण को जगाना होगा-विवेक के रूप में, कर्म के रूप में, साहस के रूप में, प्रेम के रूप में और सत्य के रूप में। श्रीकृष्ण कोई बीता हुआ इतिहास नहीं हैं। वे भारतीय चेतना की सतत प्रवाहित जीवन-ऊर्जा हैं।

हिंदी कवितायें

वो पत्थर ठोकरों वाला

गरिमा राकेश गौत्तम
राजस्थान

खेल था बचपन का एक
राह चलते किसी पत्थर को
ठोकरों से घर तक लाने का
जिसका घर तक एक ही पत्थर
पहुँचता वो विजेता होता
बे खिलखिलाते मुस्कराते
उस बेजान ,बे बान पत्थर को
अपने मनोरंजन का साधन बनाते
और वो मूक पत्थर
ठोकरों के इशारों पर आगे बे ता जाता
तब उस पत्थर के दुख का अहसास नही हुआ
ये भी नही सोचा कि
हमारी दी हुई ठोकरे उसे दुख पहुँचाती होगी
उसे उसकी कमजोरी का
अहसास दिलाती होगी
वो बेचारा कभी अपने आँसू नही बहा पाया
दर्द को अपने बया नही कर पाया
इंसान की तरह कभी कह भी नही पाया
बस उसी गुरुर में हम उसे ठोकरे मारते रहे
और वो हमारी जीत पर खामोश रहता रहा
शायद ये सोच कर कि
शायद भविष्य में कभी ये मेरा दर्द समझेंगे
और फिर कभी किसी को ठोकर नही मारेंगे. ..।

सूचना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

सम्पादक

बारिश में तालाब बनी कुंडला सिटी

रहवासी बोले-हर साल यही हाल

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,02 सितम्बर 2026
(घटती-घटना)।

शहर की पॉश कॉलोनी कुंडला सिटी में बुधवार सुबह हुई तेज बारिश के बाद एक बार फिर जलभराव की स्थिति बन गई। रातभर हुई झमाझम बारिश के बाद पूरी कॉलोनी तालाब में तब्दील हो गई। सड़कें पानी में डूबने से बच्चों और बुजुर्गों का घर से निकलना मुश्किल हो गया। रहवासियों ने नगर निगम की जलनिकासी व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए स्थायी ड्रेनेज सिस्टम बनाने की मांग की है। कॉलोनी निवासी शुभम अग्रवाल ने बताया कि पिछले साल भी भारी जलभराव के कारण कुंडला सिटी में 50 से 60 वाहन पानी में डूबकर खराब हो गए थे। वाहनों के नुकसान का मुआवजा अब तक नहीं मिला है। इस बार पानी पिछले साल की तुलना में कुछ कम रहा, लेकिन खतरा अभी टला नहीं है।बारिश से पहले रहवासियों ने नगर निगम के सहयोग से पीछे खेत की ओर जाने वाले पानी निकासी मार्ग की पोकलेन से सफाई कराई थी। इसके बाद अस्थायी नाला बनाया गया, जिससे इस बार कुछ पानी निकल सका। इसके लिए कॉलोनी के लोगों ने करीब 2 से 3 लाख रुपए चंदा जुटाकर काम कराया। रहवासियों का कहना है कि नगर निगम की ओर से अपेक्षित सहयोग नहीं मिला। कुंडला समिति के अध्यक्ष दिनेश अग्रवाल ने बताया कि पिछले साल 4 से 5 फीट पानी भरने से 50 से 60 वाहन खराब हो गए थे। इसके बाद दो लक्ष्य तय किए गए थे–कॉलोनी से पानी की निकासी और बाहर से आने वाले पानी को रोकना। इसके लिए नगर निगम में कई बार बैठकें हुईं। महापौर, पार्षद और वार्ड प्रभारी भी मौके पर पहुंचे, लेकिन स्थायी समाधान नहीं हुआ।

अग्रसेन चौक और अयान मार्ग का पानी भी मुसीबत : रहवासियों के अनुसार अग्रसेन चौक और अयान मार्ग की ओर से आने वाला पानी कुंडला सिटी में प्रवेश करता है। सड़क किनारे पर्याप्त नालियां नहीं होने से पानी नाले में जाने के बजाय सीधे कॉलोनी में पहुंच रहा है। कॉलोनी के पीछे जहां पहले पानी की निकासी होती थी, वहां अब नई प्लॉटिंग और मकान बन रहे हैं। इससे भविष्य में समस्या और गंभीर होने की आशंका है।

निजी सफाई ठेकेदार पर भी सवाल : कुंडला सिटी में निजी सफाई ठेकेदार द्वारा नालियों की नियमित सफाई नहीं करने का आरोप भी लगाया गया है। रहवासियों के अनुसार नालियां छोटी हैं और उनमें प्लास्टिक-कचरा जमा होने से पानी की निकासी बाधित रहती है। उन्होंने नगर निगम से स्थायी ड्रेनेज प्लान लागू करने की मांग की है। रहवासियों का कहना है कि शासन स्तर पर करीब एक करोड़ रुपए का फंड जारी होने और रोड मैप तैयार होने की चर्चा है, लेकिन जमीन पर इसका असर दिखाई नहीं दे रहा। उनका कहना है कि यदि स्थायी जलनिकासी की व्यवस्था नहीं की गई तो हर बारिश में कुंडला सिटी के जलमग्न होने का खतरा बना रहेगा।

संभागायुक्त नरेन्द्र कुमार दुग्गा ने राजस्व कार्यालयों में लंबित प्रकरणों के त्वरित निराकरण का दिया निर्देश

नामांतरण, बंटवारा और सीमांकन के प्रकरण समय-सीमा में हों निराकृत

-संवाददाता-
बलरामपुर,02 सितम्बर 2026
(घटती-घटना)।

सरगुजा संभाग के संभागायुक्त श्री नरेन्द्र कुमार दुग्गा ने आज जिला बलरामपुर के प्रवास के दौरान तहसील कार्यालय,अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) कार्यालय का निरीक्षण कर प्रशासनिक कार्यों का बारीकी से अवलोकन किया। उन्होंने राजस्व अधिकारियों को शासन की प्राथमिकताओं को केंद्र में रखते हुए जनमानस से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता के साथ मूर्त रूप देने के निर्देश दिए। उन्होंने विशेष रूप से नामांतरण,बंटवारा और सीमांकन जैसे प्रकरणों को समय-सीमा के भीतर तत्परतापूर्वक निराकृत करने पर जोर दिया।

तहसील कार्यालय स्थित सेवा सेतु केंद्र का अवलोकन कर संभागायुक्त ने प्राप्त आवेदनों की स्थिति जानी और लंबित मामलों का शीघ्र निपटारा सुनिश्चित करने को कहा। उन्होंने माल जमादार, नाजरात,कानूनगो शाखा,रिकॉर्ड रूम तथा तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार न्यायालयों के प्रकरणों की जांच की। इस दौरान नकल शाखा में पंजी संधारण व्यवस्थित न मिलने तथा अद्यतन जानकारी के अभाव पर उन्होंने गहरी नाराजगी व्यक्त करते हुए संबंधित लिपिक को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।

न्यायालयीन प्रकरणों का अवलोकन करते हुए उन्होंने विवादित एवं अविवादित नामांतरण,बंटवारा तथा कब्जा से संबंधित मामलों के शीघ्र निराकरण और सभी अपंजीकृत प्रकरणों को अनिवार्य रूप से ई-कोर्ट प्रणाली में दर्ज करने के निर्देश दिए। रिकॉर्ड रूम में दस्तावेजों की समुचित लिस्टिंग तथा जमा व इश्यू पंजी दुरुस्त रखने को कहा, वहीं आरबीसी 6-4 के प्रकरणों की जांच कर समय-सीमा में कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। एसडीएम कार्यालय के निरीक्षण में उन्होंने पांच वर्ष से अधिक अवधि के पुराने लंबित राजस्व प्रकरणों की अद्यतन स्थिति की समीक्षा कर इनका प्राथमिकता से निराकरण करने को कहा।

आस्था निकुंज में मूकबधिर बच्चों के साथ सेवा किटी सदस्यों ने मनाया सेवा दिवस

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

सेवा किटी समूह की सदस्यों ने बुधवार को आस्था निकुंज मूकबधिर विद्यालय में बच्चों के साथ समय बिताया। इस विद्यालय में पहली से 12वीं तक 160 मूकबधिर बच्चे अध्ययनरत हैं। समूह की सदस्यों ने बच्चों को कॉपी, पेन, पेंसिल, टॉफी, बिस्किट और बैठने के लिए टाटपट्टी का वितरण किया। इसके साथ ही बड़ी छात्राओं को सेनेटरी पैड भी दिए गए। इस दौरान बड़ी बच्चियों को वर्तमान समय में समाज में हो रही समस्याओं से खुद को सुरक्षित रखने को लेकर जागरूक भी किया गया। किस तरह से अनजान लोगों से दूरी बनानी है और अपनी सुरक्षा का ध्यान रखना है, इस पर विस्तार से जानकारी दी गई। कार्यक्रम में संस्था की प्रिंसिपल श्वेता सिस्टर के साथ सेवा किट्टी की संस्थापिका वंदना दत्ता,मधु चौदहा,सरिता भाटिया,लिली बसु राय, रश्मि गुप्ता,अतिशी भट्टाचार्य, स्मिता तिवारी एवं विद्यालय के सभी स्टाफ उपस्थित थे। सेवा किटी समूह ने निर्णय लिया है कि वे हर महीने एक बार परवाज कार्यक्रम के तहत आस्था निकुंज के बच्चों के बीच अपना समय देंगे और उनकी मदद करेंगे। साथ ही समूह के सदस्यों ने केशवपुर आंगनबाड़ी केंद्र को गोद लेकर वहां कार्य करने का भी निर्णय लिया है।

युवक ने कीटनाशक पीकर की आत्महत्या,प्रेम-प्रसंग में विवाद की आशंका

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

बलरामपुर जिले के ग्राम अखोरा खुर्द में एक युवक ने कीटनाशक दवा पीकर आत्महत्या कर ली। युवक का इलाज अंबिकापुर में चल रहा था, यहां 2 सितंबर को उसकी मौत हो गई। पिता की रिपोर्ट पर राजपुर पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। जानकारी के मुताबिक, राजपुर थाना क्षेत्र के ग्राम अखोरा खुर्द का सोहन राम पिता बिरबल साय 17 वर्ष, 9 अगस्त को सोहन ने अपना मोबाइल पटक कर तोड़ दिया था। पूछने पर वह कुछ नहीं बताया, जबकि घर में किसी से कोई विवाद भी नहीं हुआ था। 18 अगस्त की शाम करीब 7 बजे पिता घर के बाहर थे, घर में मां और छोटा पुत्र सोहन था। दो अन्य लड़के दुकान तरफ गए थे। अचानक घर के अंदर से सोहन की मां शोर मचाई तो घर के बाहर मौजूद पिता और पड़ोसी पहुंचे, इस दौरान सोहन आंगन में उल्टी कर रहा था और कीटनाशक दवा का महक आ रहा था। परिजन जब कमरे में गए तो उसके बिस्तर के पास जमीन में कीटनाशक जहर का डिब्बा पड़ा था, ढक्कन खुला था और कुछ बूंदें जमीन पर गिरी थीं। स्वजन उसे जिला अस्पताल अंबिकापुर लेकर गए, यहां करीब एक घंटे प्राथमिक इलाज चला। इसके बाद स्वजन की सहमति से उसे बेहतर इलाज के लिए होलीक्रॉस अस्पताल अंबिकापुर में भर्ती कराया था। इलाज के दौरान 2 सितंबर को डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक के पिता का कहना है कि, सोहन किसी लड़की से बातचीत करता था और दोनों के बीच मनमुटाव होने से नाराज होकर उसने संभवतः यह कदम उठाया होगा। पुलिस ने मृतक के शव को पोस्टमार्टम के बाद स्वजन को सौंप दिया है। पुलिस मृतक के मोबाइल और अन्य पहलुओं की भी जांच करेगी।

तालाब में नहाते वक्त काटा सांप,महिला की मौत

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

शहर के गांधीनगर थाना क्षेत्र अंतर्गत दशकर्म में गई महिला को तालाब में नहाते वक्त सांप काट लिया। स्वजन बेहोशी की हालत में उसे अस्पताल लेकर पहुंचे, लेकिन उसकी मौत हो गई थी। जानकारी के मुताबिक, गांधीनगर थाना क्षेत्र के बिशुनपुर खुर्द की जोसफीना टोप्पो पति स्व. निगम टोप्पो 35 वर्ष, मंगलवार को रिश्तेदारी में दशकर्म कार्यक्रम के दौरान अन्य महिलाओं के साथ गांव के ही तालाब में नहाने के लिए गई थी। नहाने के बाद ठीक नहीं लगने पर वह घर आ गई और अपने देवर नीलम कुमार को बताई के तालाब में नहाते वक्त सांप काट लिया है। इसके बाद वह अपने कमरे में जाकर सो गई। इस बीच घर में मौजूद पुत्र अपनी मां को आवाज लगाते हुए हिला-डुलाकर देखा तो वह नहीं उठी। मां के बेहोश होने की जानकारी वह अपने चाचा नीलम कुमार को दिया। स्वजन उसे आननफानन में निजी वाहन से मेडिकल कॉलेज संबद्ध अस्पताल लेकर पहुंचे, यहां आपातकालीन चिकित्सा परिसर में जांच के बाद चिकित्सक ने महिला को मृत घोषित कर दिया।

पट्टा खत्म, फिर भी बॉक्साइट खनन का आरोप; किसानों का फूटा गुस्सा...

लीज अवधि समाप्त होने के बाद भी खनन और परिवहन का आरोप,प्रशासन से निष्पक्ष जांच की मांग

-संवाददाता-
मैनपाट,02 सितम्बर 2026
(घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ का शिमला कहे जाने वाले मैनपाट के ग्राम बरिमा में बॉक्साइट खनन को लेकर किसानों का आक्रोश सामने आया है। प्रभावित भू-स्वामियों ने छत्तीसगढ़ मिनरल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन (सीएमडीसी) पर लीज अवधि समाप्त होने के बाद भी उनकी जमीन से कथित रूप से खनन और बॉक्साइट परिवहन कराने का आरोप लगाया है। किसानों ने जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपकर पूरे मामले की निष्पक्ष जांच और कार्रवाई की मांग की है। ग्रामीणों के अनुसार राजस्व प्रकरण क्रमांक 01/अ-82/2013-14 में 4 जनवरी 2017 को बरिमा की निजी भूमि सीएमडीसी को 7 वर्षों के लिए बॉक्साइट उत्खनन के लिए दी गई थी। अनुबंध के अनुसार जनवरी 2024 में लीज अवधि समाप्त हो चुकी है। किसानों का आरोप है कि लीज खत्म होने के बाद न तो जमीन मूल स्वरूप में लौटाई गई और न ही फसल व जमीन का पूरा मुआवजा दिया गया। इसके बावजूद पिछले दो वर्षों से संबंधित जमीन से बॉक्साइट निकाले जाने का आरोप है।

350 ट्रक बॉक्साइट निकालने का दावा : प्रभावित किसानों ने दावा किया है कि पिछले दो वर्षों में संबंधित खसरा नंबरों से करीब 350 ट्रक बॉक्साइट निकालकर बाजार में बेचा गया। किसानों ने अवैध रूप से निकाले गए बॉक्साइट की कीमत का भुगतान कराने और भविष्य में उनकी जमीन पर कथित अवैध उत्खनन तत्काल रोकने की मांग की है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि वे केवल फसल मुआवजे के आधार पर अपनी जमीन खनन के लिए देने को तैयार नहीं हैं।

जनसुनवाई के वादों पर भी सवाल: किसानों का कहना है कि बॉक्साइट परियोजना की जनसुनवाई के दौरान सीएमडीसी की ओर से स्थानीय लोगों को रोजगार, विकास और उचित मुआवजे सहित कई आश्वासन दिए गए थे। ग्रामीणों का आरोप है कि जमीन पर इन वादों का अपेक्षित असर दिखाई नहीं दे रहा है। इससे भू-स्वामियों में नाराजगी बढ़ रही है।

स्थायी रूप से जमीन लौटाने की मांग

भू-स्वामियों ने प्रशासन से लीज और खनन अनुमति की वैधता की जांच, संबंधित खसरा नंबरों का भौतिक सत्यापन, पिछले दो वर्षों में निकाले गए बॉक्साइट की मात्रा और उसके परिवहन-बिक्री से जुड़े दस्तावेजों की जांच कराने की मांग की है। साथ ही अनुबंध की शर्तों के अनुसार जमीन को मूल स्वरूप में वापस कराने की मांग की गई है। किसानों ने चेतावनी दी है कि उनकी मांगों पर कार्रवाई नहीं हुई तो ग्राम बरिमा स्थित सीएमडीसी के कांटाघर के पास बॉक्साइट परिवहन रोककर आंदोलन किया जाएगा। अब देखना होगा कि जिला प्रशासन और खनिज विभाग किसानों के आरोपों की जांच कर क्या कार्रवाई करते हैं।

बलरामपुर डीईओ का बड़ा बयान : 4.51 करोड़ गबन के आरोपों को बताया बेबुनियाद पुराने चार निलंबनों पर भी दी सफाई

-संवाददाता-
बलरामपुर,02 सितम्बर 2026
(घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले में जिला शिक्षा अधिकारी से जुड़े 4.51 करोड़ रुपये के कथित गबन और प्रशासनिक कार्रवाइयों के मामले में डीईओ ने लिखित तथ्यात्मक स्पष्टीकरण जारी कर अपना रुख साफ किया है। डीईओ ने वर्तमान में जारी जांच रिपोर्ट पर सवाल उठाते हुए अपने ऊपर लगे सभी पुराने और नए आरोपों को निराधार बताया है।

4.51 करोड़ के गबन के आरोपों पर उठाए सवाल : हाल ही में कलेक्टर द्वारा गठित जांच दल द्वारा 4.51 करोड़ रुपये की शासकीय राशि के गबन की बात कहे जाने पर डीईओ ने कहा कि उन्होंने जांच टीम को सामग्री क्रय, ज़द्दरूएजेंसी के गुणवत्ता प्रमाण-पत्र और स्टॉक पंजी से जुड़े सभी प्रासंगिक दस्तावेज सौंपे थे। भुगतान जिला कोषालय अधिकारी द्वारा जांच के बाद ही किया गया था। ऐसे में किन परिस्थितियों में गबन का आरोप रिपोर्ट किया गया, यह वरिष्ठ अधिकारियों के लिए जांच का विषय है।

बार बार हुए निलंबन पर दिया विस्तृत ब्योरा

- **1993 मामला :** विदित हो कि उक्त मामले में राजपुर थाने में दर्ज एफआईआर में न्यायालय द्वारा निर्दोष बरी किए जाने के बाद विभाग ने निलंबन से बहाल कर अवधि को सेवा अवधि माना।
- **2015 का 2.42 करोड़ का मामला :** पुलिस और सरगुजा आयुक्त की विभागीय जांच में आरोप प्रमाणित नहीं होने पर प्रकरण नस्तीबद्ध किया गया।
- **2022 की शिकायत :** संयुक्त संचालक द्वारा जांच में शिकायत झूठी पाई गई, जिसके बाद संचालक स्तर से प्रकरण समाप्त किया गया।
- **मई 2025 (भृत्य भुगतान प्रकरण) :** सेवानिवृत्त भृत्य के स्वत्वों के भुगतान में देरी का कारण अभिलेखीय सुधार में असहयोग बताया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि 30 अप्रैल 2025 को ही उनकी प्राचार्य पद पर पदोन्नति हो चुकी थी।

चार्जर में जुगाड़ पड़ा भारी,करंट लगने से युवक की दर्दनाक मौत

-संवाददाता-
उदयपुर,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

मोबाइल चार्ज करने के चक्कर में किए गए जुगाड़ ने एक युवक की जान ले ली। घटना उदयपुर थाना क्षेत्र के ग्राम डोंडी की है। युवक चार्जर में अतिरिक्त तार जोड़कर बोर्ड में लगाने के दौरान करंट की चपेट में आ गया और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक, घटना के समय मृतक रविन्द्र सिंह का चाचा ठाकुर सिंह एक सितंबर को दोपहर करीब 12 बजे सब्जी लेने अपने भतीजे के घर गया था। घर के अंदर घुसते ही उसने देखा कि उसका भतीजा रविन्द्र जमीन पर गिरा हुआ है और छटपटा रहा है। चाचा को सामने देखकर भतीजे ने किसी तरह कहा करंट मार रहा है, तार छुड़ाओ। ठाकुर सिंह ने हिम्मत दिखाते हुए तुरंत बिजली बोर्ड से तार को हटाया, तो पता चला कि युवक ने मोबाइल चार्जर के तार में दूसरा तार जोड़कर जुगाड़ से उसे प्लग में लगाया था। चार्ज करते समय तार में उसकी दोनों हाथों की उंगलियां चिपक गईं और वह बुरी तरह करंट की चपेट में आ गया। परिजन आनन-फानन में उसे सीएचसी उदयपुर लेकर भागे, यहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। उदयपुर पुलिस ने मामले में मर्ग कायम करके मृतक के शव को पंचनामा, पोस्टमार्टम के बाद स्वजन के सुपुर्द कर दिया है।

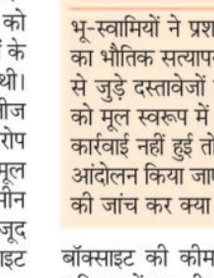

संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय पीएच.डी. प्रवेश परीक्षा सितंबर को

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय द्वारा पीएच.डी. प्रवेश परीक्षा 2026 के लिए परीक्षा केंद्र, तिथि एवं समय निर्धारित कर दिया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा जारी सूचना के अनुसार पीएच.डी. प्रवेश परीक्षा 18 सितम्बर 2026 को सुबह 09:00 से दोपहर 12:00 बजे तक परीक्षा केन्द्र अम्बिकापुर के सरस्वती महाविद्यालय सुभाषनगर में आयोजित होगी। परीक्षा में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों की विषयवार सूची विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.sggvscg.ac.in पर उपलब्ध है।

अकेली देख महिला से जबरन दुष्कर्म करने वाला आरोपी गिरफ्तार,बतौली पुलिस की त्वरित कार्रवाई

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,02 सितम्बर 2026
(घटती-घटना)।

महिला संबंधी अपराधों पर शून्य सहनशीलता की नीति अपनाते हुए थाना बतौली पुलिस टीम ने दुष्कर्म के मामले में बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए वारदात के महज 24 घंटे के भीतर आरोपी को धरदबोचा और न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया है।

घर पर अकेली देखकर जबरन की थी दरिंदगी : थाना बतौली से मिली जानकारी के अनुसार, पीड़िता ने 1 सितंबर 2026 को थाने आकर लिखित रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि कदनई सुगाझरिया निवासी जयप्रकाश पैकरा ने उसे घर पर अकेली पाकर उसकी बेबसी का फायदा उठाया. पीड़िता द्वारा लगातार मना करने और विरोध करने के बावजूद आरोपी ने उसके साथ जबरन दुष्कर्म की घिनौनी वारदात को अंजाम दिया।

बीएनएस की नई धाराओं के तहत मामला दर्ज : प्रार्थिया की शिकायत को गंभीरता से लेते हुए बतौली पुलिस ने बिना वक्त गंवाए आरोपी के खिलाफ अपराध क्रमांक 113/2026, भारतीय न्याय संहिता की धारा 296 (अश्लीलता/गाली-गलौज), 351(3) (आपराधिक धमकी) और 64(1) (दुष्कर्म) के तहत अपराध पंजीबद्ध कर मामले को विवेचना में लिया।

पूछताछ में कबूला जुर्म,भेजा गया जेल : मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए थाना प्रभारी के नेतृत्व में पुलिस टीम ने तत्काल दबिश देकर आरोपी जयप्रकाश पैकरा (24 वर्ष), आत्मज सुदामा पैकरा, निवासी कदनई सुगाझरिया को हिरासत में ले लिया. कड़ाई से पूछताछ करने पर आरोपी ने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया. अपराध का पर्याप्त सबूत मिलने पर पुलिस ने आरोपी को विधिवत गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया, जहां से उसे न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया है.

कार्रवाई में शामिल पुलिस टीम: इस पूरी त्वरित और सफल कार्रवाई में थाना प्रभारी बतौली निरीक्षक विवेक सेंगर, प्रशिक्षु उप निरीक्षक शिव कुमार ध्रुव, महिला आरक्षक मेरी क्लोरेट, आरक्षक राजेश खलखो, राकेश एक्का और जोगी बड़ा की सराहनीय व सक्रिय भूमिका रही।

घंटों जाम में फंसी रहीं गाडियां,बारिश ने बढ़ाई परेशानी, भारत माता चौक से दरिमा चौक तक एनएच-43 पर लगा लंबा जाम,गड्ढों में बोल्डर डालने से सड़क और संकरी

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,02 सितम्बर 2026
(घटती-घटना)।

नेशनल हाईवे-43 पर भारत माता चौक से दरिमा चौक तक बुधवार को घंटों जाम की स्थिति बनी रही। बारिश के कारण सड़क पर पानी भरने और जगह-जगह गड्ढे होने से वाहनों की रफ्तार थम गई। कई किलोमीटर तक वाहनों की कतार लगने से लेगों को भी परेशानी का सामना करना पड़ा। भारी वाहनों के साथ चारपहिया वाहन भी सडक़ पर रेंगते नजर आए। भाजपा संगठन महामंत्री की फटकार के बाद सडक़ के गड्ढों में बोल्डर डालकर भराव किया गया है। इससे छोटे वाहनों के लिए सडक़ और खतरनाक हो गई है। बारिश का पानी भरने से गड्ढों का अंदाजा नहीं लग पा रहा है। लोगों का कहना है कि हाईवे का निर्माण जल्द होना चाहिए, क्योंकि मौजूदा स्थिति में रोजाना आवागमन मुश्किल हो रहा है।

44 लाख की राशि स्वीकृत, फिर भी राहत नहीं : भारत माता चौक से दरिमा चौक तक सडक़ के नवनिर्माण के लिए करीब 44 लाख रुपए की राशि स्वीकृत की गई है। वहीं कांग्रेस ने सडक़ की बदहाली को लेकर प्रदर्शन कर जल्द निर्माण की मांग की है। इसके बावजूद फिलहाल लोगों को खराब सडक़ और जाम की समस्या से जूझना पड़ रहा है।

सोनवर्षा के मासूमों का 'बरसाती इम्तिहान' नाला पार कर स्कूल जाने की मजबूरी

बारिश में बढ़ता पानी,घटती सुरक्षाः हादसे का इंतजार या पहले होगी व्यवस्था?

वार्ड क्रमांक 07 में किताबों से ज्यादा जरूरी हो गया पानी के बहाव से बचना, पुलिया के अभाव में हर दिन जोखिम उठा रहे बच्चे

सोनवर्षा में नाला पार कर स्कूल जाने को मजबूर बच्चे, बदहाल व्यवस्था ने बढ़ाया जान का खतरा

राजन पाण्डेय

मनेंद्रगढ़,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

मानसून आते ही ग्रामीण और दूरस्थ इलाकों में विकास के दावों की असली तस्वीर सामने आने लगती है, मनेंद्रगढ़ क्षेत्र के सोनवर्षा वार्ड क्रमांक 07 से सामने आई तस्वीरें इसी जमीनी हकीकत को बयां कर रही हैं,यहां स्कूली बच्चों को शिक्षा हासिल करने के लिए किसी सामान्य रास्ते से नहीं,बल्कि बरसात में उफनते नाले को पार कर स्कूल पहुंचना पड़ रहा है,बच्चों के कंधे पर स्कूल बैग है, हाथों में किताबें हैं और सामने तेज बहाव वाला पानी–ऐसे में हर कदम सिर्फ स्कूल की ओर नहीं,बल्कि जोखिम की ओर भी बढ़ता दिखाई देता है,सरकार की योजनाओं में बच्चों की शिक्षा,सुरक्षित आवागमन और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास को प्राथमिकता दिए जाने की बात कही जाती है,लेकिन सोनवर्षा की स्थिति इन दावों के सामने एक सीधा सवाल खड़ा करती है–क्या स्कूल तक पहुंचने के लिए किसी बच्चे को अपनी जान जोखिम में डालनी चाहिए?

किताबों के साथ नाला पार करते मासूम

सोनवर्षा वार्ड क्रमांक 07 में बारिश के दिनों में नाले का जलस्तर बढ़ जाता है, स्थानीय स्तर पर सामने आई तस्वीरों और ग्रामीणों के अनुसार बच्चों को इसी पानी को पार कर स्कूल जाना पड़ता है, पानी का बहाव बढ़ने पर यह रास्ता और अधिक खतरनाक हो जाता है,जिस उम्र में बच्चों को स्कूल की कक्षा में बैठकर पढ़ाई करनी चाहिए,उसी उम्र में उन्हें पानी की गहराई, बहाव और फिसलन का अंदाजा लगाकर कदम बढ़ाना पड़ रहा है, एक तरफ स्कूल पहुंचने की मजबूरी है तो दूसरी तरफ रास्ते में किसी अनहोनी की आशंका, सबसे चिंताजनक स्थिति तब बनती है, जब तेज बारिश के बाद नाले में अचानक पानी बढ़ जाता है, बरसाती नालों का जलस्तर स्थिर नहीं रहता, कुछ समय पहले तक सामान्य दिखने वाला रास्ता अचानक तेज बहाव वाली धारा में बदल सकता है। ऐसे में छोटे बच्चों के लिए नाला पार करना बेहद जोखिमपूर्ण हो सकता है।

अभिभावकों के सामने मजबूरी, बच्चों के सामने जोखिम- स्थानीय लोगों के मुताबिक बारिश के दौरान नाले का पानी बढ़ने पर बच्चों को स्कूल भेजना अभिभावकों के लिए चिंता का विषय बन जाता है, बच्चे शिक्षा से वंचित न हों, इसलिए उन्हें भेजना पड़ता है, लेकिन रास्ते का जोखिम हर समय डर पैदा करता है, ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले बच्चे भी शहरों के बच्चों की तरह सुरक्षित रास्ते से स्कूल पहुंचने के हकदार हैं, किसी बच्चे का ग्रामीण या दूरस्थ क्षेत्र में रहना उसके लिए अतिरिक्त जोखिम का कारण नहीं होना चाहिए, यदि किसी इलाके में वर्षों से आवागमन की समस्या है और बरसात में वह समस्या जानलेवा रूप ले लेती है, तो उसे केवल मौसमी परेशानी मानकर छोड़ देना प्रशासनिक संवेदनशीलता पर सवाल खड़ा करता है।

विकास के दावों और जमीनी तस्वीर में कितना अंतर?- ग्रामीण इलाकों में सड़क, पुल-पुलिया और आवागमन की सुविधाओं को लेकर लगातार विकास कार्यों की बातें होती हैं, लेकिन सोनवर्षा वार्ड क्रमांक 07 की तस्वीर यह पूछने को मजबूर करती है कि विकास की योजनाओं की प्राथमिकता तय करते समय ऐसे रास्तों का सर्वेक्षण कितना गंभीरता से किया जाता है, एक तरफ बड़े विकास कार्यों की चर्चा होती है, दूसरी तरफ किसी छेटे से नाले पर सुरक्षित पुलिया का अभाव बच्चों के रोजमर्रा के जीवन को प्रभावित कर रहा है, सवाल यह नहीं है कि समस्या कितनी बड़ी है, सवाल यह है कि समस्या के कारण कितने लोग प्रभावित हो रहे हैं और कब तक होते रहेंगे।

'हादसा होने के बाद' वाली व्यवस्था से कब मिलेगी मुक्ति?- ग्रामीणों की सबसे बड़ी चिंता यही है कि कहीं इस समस्या का समाधान किसी दुर्घटना के बाद करने की परंपरा न बन जाए, अक्सर किसी घटना के बाद अधिकारी मौके पर पहुंचते हैं, स्थिति का जायजा लिया जाता है और कार्रवाई का आश्वासन दिया जाता है, लेकिन सवाल यह है कि जब खतरा पहले से दिखाई दे रहा है तो हादसे का इंतजार क्यों? सोनवर्षा में बच्चों का नाला पार करना कोई छिपी हुई समस्या नहीं है, तस्वीरें खुद इस स्थिति की गंभीरता बयान कर रही हैं, ऐसे में संबंधित विभागों को मौके का निरीक्षण कर यह पता लगाना चाहिए कि यहां स्थायी पुलिया, पुल या सुरक्षित वैकल्पिक मार्ग की क्या आवश्यकता है।

स्कूल जाना शिक्षा का अधिकार,जोखिम उठाना मजबूरी क्यों?

शिक्षा बच्चों के भविष्य की बुनियाद है,लेकिन यदि विद्यालय तक पहुंचने का रास्ता ही सुरक्षित नहीं है तो ग्रामीण बच्चों के सामने एक अजीब परिस्थिति पैदा हो जाती है,अभिभावकों के सामने भी दोहरी चिंता है,बच्चों को स्कूल नहीं भेजेंगे तो पढ़ाई प्रभावित होगी और भेजेंगे तो रास्ते में उनकी सुरक्षा को लेकर डर बना रहेगा,खासकर छोटे बच्चों के मामले में यह चिंता और गंभीर हो जाती है,सवाल यह भी है कि यदि किसी बच्चे का पैर फिसल जाए,वह पानी के बहाव में गिर जाए या अचानक जलस्तर बढ़ जाए तो उस स्थिति में जिम्मेदारी किसकी होगी?

बरसात में नाला बन जाता है 'अघोषित परीक्षा केंद्र'

सोनवर्षा की तस्वीर को अगर व्यंग्यात्मक अंदाज में देखा जाए तो यहां बच्चों की पढ़ाई के साथ एक अतिरिक्त विषय भी जुड़ गया है नाला पार करने की कला,स्कूल बैग में किताबें हैं,लेकिन रास्ते में बच्चों को किताबों से ज्यादा पानी की गहराई और बहाव पर ध्यान देना पड़ता है, शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य बच्चों को सुरक्षित वातावरण देना होना चाहिए,मगर यहां रास्ता ही बच्चों की परीक्षा लेता नजर आ रहा है, यह स्थिति केवल एक सड़क या पुलिया की कमी नहीं बताती,बल्कि यह भी दिखाती है कि विकास की योजनाएं बनाते समय छोटी लेकिन बेहद जरूरी आधारभूत जरूरतों को कितना महत्व दिया जाता है।

जिम्मेदारी तय करने की जरूरत

यदि किसी बच्चे के साथ नाला पार करते समय दुर्घटना होती है तो स्वाभाविक रूप से सवाल उठेगा कि संबंधित विभागों और स्थानीय प्रशासन को इस जोखिम की जानकारी थी या नहीं, क्या पंचायत ने इस समस्या को चिन्हित किया है? क्या संबंधित विभाग ने स्थल का निरीक्षण किया है? क्या पुलिया निर्माण के लिए कोई प्रस्ताव तैयार किया गया है? क्या स्कूल प्रबंधन ने बच्चों की सुरक्षा को लेकर प्रशासन को अवगत कराया है? इन सवालों का जवाब सामने आना जरूरी है।

पहले अस्थायी व्यवस्था,फिर स्थायी समाधान

स्थायी पुलिया या सुरक्षित मार्ग बनने में यदि समय लगता है तो तब तक प्रशासन को वैकल्पिक व्यवस्था पर विचार करना चाहिए,बारिश के दिनों में बच्चों को जोखिम वाले रास्ते से रोकने,सुरक्षित वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध कराने और जलस्तर बढ़ने की स्थिति में निगरानी व्यवस्था करने जैसे कदम तत्काल उठाए जा सकते हैं,इसके साथ ही नाले की तकनीकी स्थिति, जल प्रवाह और बरसात में अधिकतम जलस्तर का आकलन कर स्थायी निर्माण की योजना तैयार करना जरूरी होगा।

सोनवर्षा पूछ रहा है...किताबें भारी हैं या व्यवस्था की चुप्पी?

सोनवर्षा वार्ड क्रमांक 07 की तस्वीर सिर्फ बच्चों के नाला पार करने की तस्वीर नहीं है, यह ग्रामीण विकास की प्राथमिकताओं पर सवाल है, यह उस व्यवस्था से सवाल है,जहां बच्चे स्कूल जाने के लिए किताबों के साथ जोखिम भी लेकर निकलते हैं, बच्चों के हाथों में किताबें होनी चाहिए,पानी के तेज बहाव में संतुलन बनाने की मजबूरी नहीं,उनके रास्ते में स्कूल की घंटी होनी चाहिए, खतरे की धारा नहीं,अब जरूरत इस बात की है कि प्रशासन इस समस्या को केवल बरसात की मौसमी परेशानी न मानकर बच्चों की सुरक्षा और शिक्षा से जुड़ा गंभीर विषय समझे, संबंधित अधिकारी मौके का निरीक्षण करें, तत्काल सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करें और स्थायी पुलिया अथवा सुरक्षित मार्ग के निर्माण की दिशा में ठोस कदम उठाएं, क्योंकि किसी मासूम के बह जाने के बाद पुलिया बनाना विकास नहीं, बल्कि व्यवस्था की देर से जागी संवेदना होगी, सोनवर्षा के बच्चों को हादसे का इंतजार नहीं, सुरक्षित रास्ता चाहिए।

सर्वसम्मति से अमृतांशु मिश्रा बने तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ के कोरिया जिला अध्यक्ष

-संवाददाता-
कोरिया 02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ प्रदेश तृतीय वर्ग शासकीय कर्मचारी संघ की जिला कोरिया इकाई की बैठक में संगठनात्मक बदलाव को लेकर महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया, बैठक में अमृतांशु मिश्रा को सर्वसम्मति से संगठन का कोरिया जिला अध्यक्ष घोषित किया गया, उनके नाम की घोषणा होते ही उपस्थित पदाधिकारियों एवं कर्मचारी साथियों ने पुष्पगुच्छ भेंट कर बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। बैठक के दौरान अमृतांशु मिश्रा ने संगठन की आजीवन सदस्यता भी ग्रहण की, इस अवसर पर कर्मचारी साथियों ने उनका स्वागत करते हुए उम्मीद जताई कि उनके नेतृत्व में जिले में संगठन को नई ऊर्जा मिलेगी और कर्मचारियों से जुड़े विभिन्न मुद्दों को मजबूती के साथ संबंधित मंचों पर उठाया जाएगा।

कर्मचारी हितों के मुद्दों को प्राथमिकता देने की उम्मीद- नवनियुक्त जिला अध्यक्ष अमृतांशु मिश्रा को संगठन के पदाधिकारियों ने सक्रिय,ऊर्जावान एवं कर्मचारियों के बीच सहज संवाद रखने वाला साथी बताते हुए उनके नेतृत्व पर भरोसा जताया। पदाधिकारियों का कहना है कि कर्मचारी हितों से जुड़े कई मुद्दे लंबे समय से लंबित हैं। ऐसे में नए नेतृत्व के सामने संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करने के साथ कर्मचारियों की समस्याओं को एकजुट होकर उठाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होगी,बैठक में संगठन की आगामी गतिविधियों, सदस्यता विस्तार तथा कर्मचारियों से जुड़े विषयों पर चर्चा की गई। उपस्थित सदस्यों ने संगठन को मजबूत बनाने और जिले के अलग-अलग विभागों में कार्यरत कर्मचारियों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने पर भी जोर दिया।

संगठन को मजबूत बनाने का संकल्प- जिला अध्यक्ष की जिम्मेदारी मिलने के बाद अमृतांशु मिश्रा ने संगठन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए कर्मचारी हितों से जुड़े विषयों को प्राथमिकता के साथ उठाने की बात कही,उन्होंने संगठन के पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों के विश्वास के लिए आभार व्यक्त किया,उन्होंने कहा कि संगठन की मजबूती सामूहिक प्रयासों से ही संभव है,कर्मचारियों की समस्याओं और मांगों को उचित मंच तक पहुंचाने के लिए सभी साथियों के साथ समन्वय बनाकर काम किया जाएगा,उन्होंने कर्मचारी हितों से जुड़े मामलों में संगठन की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करने पर जोर दिया।

पदाधिकारियों ने जताया विश्वास- बैठक में उपस्थित प्रदेश एवं संभागीय पदाधिकारियों सहित विभिन्न कर्मचारी संगठनों के प्रतिनिधियों ने अमृतांशु मिश्रा को नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दीं, पदाधिकारियों ने विश्वास जताया कि उनके नेतृत्व में कोरिया जिला इकाई में संगठनात्मक गतिविधियों को गति मिलेगी और कर्मचारी हितों से जुड़े विषयों को प्रभावी तरीके से सामने रखा जा सकेगा, बैठक के अंत में उपस्थित कर्मचारी प्रतिनिधियों ने संगठन की एकजुटता बनाए रखने तथा कर्मचारियों की समस्याओं के समाधान के लिए सामूहिक रूप से प्रयास करने का संकल्प लिया।

40 साल की सेवा के बाद निरीक्षक जे.एस.कंवर और एसआई रामप्रताप साहू सेवानिवृत्त

पुलिस विभाग ने भावभीनी विदाई देकर किया सम्मान,एसपी योगेश कुमार पटेल ने शॉल-श्रीफल व स्मृति चिन्ह भेंट किए

-संवाददाता-
सूरजपुर,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

पुलिस विभाग में वर्षों तक अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा और समर्पण के साथ सेवाएं देने के बाद निरीक्षक जे.एस. कंवर एवं उप निरीक्षक रामप्रताप साहू सोमवार,31 अगस्त 2026 को शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त हो गए, जिला पुलिस कार्यालय सूरजपुर में आयोजित विदाई समारोह में पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों ने दोनों सेवानिवृत्त अधिकारियों को भावभीनी विदाई दी और उनके लंबे सेवाकाल को याद करते हुए उनके योगदान की सराहना की।

निरीक्षक जे.एस. कंवर ने पुलिस विभाग में 40 वर्ष 5 माह तथा उप निरीक्षक रामप्रताप साहू ने 35 वर्ष 10 माह तक अपनी सेवाएं दीं। दोनों अधिकारियों के लिए यह सेवानिवृत्ति केवल शासकीय सेवा से विदाई का अवसर नहीं,बल्कि दशकों लंबे पुलिस सेवाकाल के अनुभवों,जिम्मेदारियों और यादों को समेटने का भी भावुक क्षण रहा।

एसपी ने किया सम्मानित- विदाई समारोह में पुलिस अधीक्षक सूरजपुर योगेश कुमार पटेल (भापुसे) ने दोनों अधिकारियों को उनके दीर्घ सेवाकाल एवं विभाग के प्रति योगदान के लिए सम्मानित किया, पुलिस अधीक्षक ने शॉल,श्रीफल,स्मृति चिन्ह एवं उपहार भेंट कर दोनों अधिकारियों के प्रति सम्मान व्यक्त किया,इस अवसर पर एसपी योगेश कुमार पटेल ने कहा कि पुलिस विभाग में चार दशक से अधिक समय तक पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ सेवाएं देना अपने आप में गौरवपूर्ण उपलब्धि है,उन्होंने कहा कि दोनों अधिकारियों ने अपने सेवाकाल में जिम्मेदारी और अनुशासन के साथ कर्तव्यों का निर्वहन किया तथा अपने अनुभवों से अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों का मार्गदर्शन भी किया।

उन्होंने कहा कि पुलिस सेवा चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारियों से जुड़ी होती है,कानून-व्यवस्था बनाए रखने, अपराधों की रोकथाम,आमजन की सुरक्षा तथा जरूरत के समय लोगों की सहायता करने में पुलिसकर्मियों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। दोनों अधिकारियों ने लंबे सेवाकाल के दौरान इन दायित्वों का निर्वहन किया, एसपी ने उनके स्वस्थ,सुखद एवं दीर्घायु जीवन की कामना करते हुए सेवानिवृत्ति के बाद के जीवन के लिए शुभकामनाएं दीं।

अनुभव साझा करते हुए हुए भावुक- समारोह के दौरान सेवानिवृत्त हो रहे निरीक्षक जे.एस. कंवर एवं उप निरीक्षक रामप्रताप साहू ने भी पुलिस सेवा के दौरान प्राप्त अनुभवों को साझा किया, उन्होंने अपने सेवाकाल में सामने आई चुनौतियों,महत्वपूर्ण कार्यवाहियों और यादगार घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि पुलिस सेवा में रहते हुए आमजन की सुरक्षा और सेवा को हमेशा प्राथमिकता देने का प्रयास किया, दोनों अधिकारियों ने विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों,सहकर्मियों और अधीनस्थ कर्मचारियों के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया, उन्होंने कहा कि लंबे समय तक एक परिवार की तरह पुलिस विभाग के साथ काम करने के बाद सेवा से विदाई लेना भावुक क्षण है। हालांकि सेवानिवृत्ति के बाद भी पुलिस विभाग और सहकर्मियों से जुड़ी यादें हमेशा साथ रहेंगी।

परिजनों की मौजूदगी ने बढ़ाया भावुक पल- विदाई समारोह में जिला पुलिस के अधिकारियों और कर्मचारियों ने दोनों सेवानिवृत्त अधिकारियों के साथ बिताए सेवाकाल के अनुभवों को याद किया, सहकर्मियों ने उनके व्यवहार, कार्यशैली और विभागीय योगदान की चर्चा करते हुए उनके आगामी जीवन के लिए शुभकामनाएं दीं, समारोह में सेवानिवृत्त अधिकारियों के परिजनों की मौजूदगी ने माहौल को और भावुक बना दिया। पुलिस परिवार के सदस्यों ने भी दोनों अधिकारियों के स्वस्थ एवं सुखमय भविष्य की कामना की।

वरिष्ठ अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक योगेश देवांगन,एसडीओपी सूरजपुर अभिषेक पैंकरा,सीएसपी बेनार्ड कुजूर,डीएसपी मुख्यालय महालक्ष्मी कुलदीप एवं रक्षित निरीक्षक अशोक गिरी सहित जिला पुलिस कार्यालय के अधिकारी-कर्मचारी तथा सेवानिवृत्त अधिकारियों के परिजन उपस्थित रहे, समारोह में अधिकारियों और कर्मचारियों ने दोनों सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारियों के दीर्घ सेवाकाल को सम्मान के साथ याद करते हुए कहा कि उनकी सेवाएं विभाग के लिए महत्वपूर्ण रही हैं,पुलिस विभाग की ओर से उन्हें सम्मानपूर्वक विदाई देते हुए उनके स्वस्थ, सुखद और दीर्घायु जीवन की कामना की गई।

पीएचडी प्रवेश परीक्षा 18 सितंबर को, प्रवेश पत्र वितरण शुरू

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा की पीएचडी प्रवेश परीक्षा-2026 के लिए प्रवेश पत्र वितरण शुरू हो गया है। परीक्षा 18 सितंबर को सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक सरस्वती महाविद्यालय, सुभाषनगर अंबिकापुर में होगी। विश्वविद्यालय ने विषयवार अभ्यर्थियों की सूची भी वेबसाइट पर जारी कर दी है। विश्वविद्यालय की 24 अगस्त को जारी अधिसूचना के अनुसार अभ्यर्थी 1 से 16 सितंबर तक कार्यालयीन समय में प्रशासनिक भवन स्थित छात्र सहायता केंद्र से प्रवेश पत्र प्राप्त कर सकते हैं। प्रवेश पत्र मिलने के बाद अभ्यर्थियों को नाम, विषय, फोटो सहित अन्य विवरणों की जांच करने के निर्देश दिए गए हैं। त्रुटि होने पर अकादमिक विभाग से संपर्क कर तत्काल सुधार कराना होगा।

17 वर्ष पूर्व के मामले में जारी स्थाई वारंट तामिल,आरोपी गिरफ्तार..

- **थाना कोतवाली पुलिस टीम द्वारा स्थाई वारंट किया गया तामिल।**
- **एक्सीडेंट के मामले मे जारी वारंट पर की गई कार्यवाही।**
- **आरोपी को माननीय न्यायालय के समक्ष किया गया पेश।**

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

डीआईजी एवं एसएसपी सरगुजा श्री राजेश अग्रवाल (भा.पु.से.) द्वारा जिले के सभी थाना/चौकी प्रभारियों को अपने अपने थाना छेत्र मे लंबित स्थाई वारंट/गिरफ्तारी वारंट की तामिली कर वर्षो से फरार चल रहे वारंटियों कों माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करने के दिशा निर्देश दिए गए है, इसी क्रम मे थाना कोतवाली पुलिस टीम द्वारा आ.क्रमांक 265/09 धारा 279, 337, 338 भा.द.वि. के माममे मे फरार चल रहे आरोपी रामभरत विश्वकर्मा आत्मज ननका विश्वकर्मा उम्र 35 वर्ष साकिन शिव मंदिर के पास थाना गांधीनगर के प्रकरण मे उपस्थित नही रहने पर माननीय न्यायालय द्वारा आरोपी का स्थाई वारंट जारी किया गया था, आरोपी कों न्यायालय के समक्ष पेश करने हेतु जारी स्थाई वारंट के अनुसार थाना कोतवाली पुलिस टीम के प्रयास से फरार चल रहे स्थाई वारंटी कों पकड़कर माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया हैं।

खराब सड़क को लेकर कांग्रेस का चक्काजाम,मिला लिखित आश्वासन

सीतापुर में पूर्व मंत्री अमरजीत भगत के नेतृत्व में प्रदर्शन,15 अक्टूबर के बाद नवनिर्माण का भरोसा

-संवाददाता-
सीतापुर,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

सड़क की बदहाली और मरम्मत की मांग को लेकर बुधवार को कांग्रेसियों ने पूर्व मंत्री अमरजीत भगत के नेतृत्व में सीतापुर में चक्काजाम कर प्रदर्शन किया। पूर्व मंत्री के निवास के सामने दोपहर 12 बजे आयोजित जनसभा में उन्होंने प्रदेश सरकार और स्थानीय विधायक पर सड़क की अनदेखी का आरोप लगाया। अमरजीत भगत ने कहा कि तीन साल में विधायक सीतापुर की करीब तीन किलोमीटर सड़क का निर्माण नहीं करा सके।

सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे हो गए हैं और आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। प्रशासन और संबंधित विभाग को कई बार चेतावनी देने के बावजूद समस्या का समाधान नहीं किया गया। जनसभा के बाद दोपहर करीब 3 बजे कांग्रेसियों ने नेशनल हाईवे पर चक्काजाम कर दिया। इससे दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गई।

15 अक्टूबर के बाद शुरू होगा नवनिर्माण : प्रदर्शन के दौरान एसडीएम और नेशनल हाईवे के इंजीनियर की ओर से लिखित आश्वासन दिया गया। पूर्व मंत्री ने बताया कि 15 अक्टूबर के बाद सड़क का नवनिर्माण शुरू किया जाएगा। इससे पहले सड़क के सभी गड्ढों को भरने का आश्वासन दिया गया है। लिखित आश्वासन मिलने के बाद कांग्रेसियों ने चक्काजाम समाप्त कर दिया।

बैंकुंठपुर की सड़क चौड़ीकरण मांग को मिली 88.51 करोड़ की मंजूरी

क्या चुनाव से पहले भाजपा ने विपक्ष का बड़ा मुद्दा अपने पाले में कर लिया?

खरवत चौक से जमगहना तक 13 किमी मार्ग होगा 4-लेन

- विधायक भैयालाल राजवाड़े के प्रयासों को भाजपा ने दिया श्रेय
- घंड़ी चौक पर आतिशबाजी कर मनाया जश्न, मिष्ठान वितरण
- मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, वित्त मंत्री ओपी चौधरी के प्रति आभार

चुनाव से पहले भाजपा का बड़ा दांव: बैकुंठपुर की सड़क चौड़ीकरण मांग पर 88.51 करोड़ की मुहर

बैकुंठपुर की सड़क चौड़ीकरण मांग को मिली 88.51 करोड़ की मंजूरी

क्या चुनाव से पहले भाजपा ने विपक्ष का बड़ा मुद्दा अपने पाले में कर लिया?

खरवत चौक से जमगहना तक 13 किमी सड़क होगी 4-लेन,विधायक भैयालाल राजवाड़े के प्रयासों का भाजपा ने दिया श्रेय,घड़ी चौक में आतिशबाजी कर मनाया जश्न

जिस सड़क पर घिर सकती थी भाजपा, उसी पर अब श्रेय की सियासत,बैकुंठपुर 4-लेन को 88.51 करोड़ मंजूर

बैकुंठपुर में सड़क चौड़ीकरण की राह साफ, भाजपा के हाथ लगा चुनावी 'विकास कार्ड'

सड़क चौड़ीकरण पर सरकार की मुहर, विधायक भैयालाल राजवाड़े के प्रयासों को भाजपा ने बताया बड़ी उपलब्धि

वर्षों की मांग पूरी, चुनावी मुद्दा हुआ कमजोर? बैकुंठपुर 4-लेन के लिए 88.51 करोड़ स्वीकृत

बैकुंठपुर की सड़कों पर विकास की '4-लेन' पटकथा, चुनाव से पहले भाजपा ने साधा बड़ा निशाना

घड़ी चौक पर आतिशबाजी, सड़क चौड़ीकरण की स्वीकृति पर भाजपा का जश्न...अब काम शुरू होने का इंतजार

-रवि सिंह-

कोरिया,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

कोरिया जिला मुख्यालय बैकुंठपुर शहर की लंबे समय से चली आ रही सड़क चौड़ीकरण की बहुप्रतीक्षित मांग आखिरकार शासन की स्वीकृति तक पहुंच गई है,छत्तीसगढ़ शासन के लोक निर्माण विभाग ने खरवत चौक से गेज नदी पुल होते हुए जमगहना मुख्य मार्ग तक करीब 13 किलोमीटर सड़क को 4-लेन में विकसित करने के लिए 8851.29 लाख रुपये यानी 88 करोड़ 51 लाख 29 हजार रुपये की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की है, शासन का यह आदेश 1 सितंबर 2026 को जारी हुआ है।

लंबे समय से सड़क चौड़ीकरण को लेकर शहर के युवाओं, व्यापारियों और नागरिकों के बीच मांग उठती रही है,ऐसे में इस स्वीकृति को केवल एक सड़क परियोजना के रूप में नहीं, बल्कि बैकुंठपुर की स्थानीय राजनीति के लिहाज से भी महत्वपूर्ण घटनाक्रम माना जा रहा है, खासकर नगरीय राजनीति में यह सवाल उठने लगा है कि जिस सड़क चौड़ीकरण को लेकर आने वाले चुनाव में भाजपा से सवाल किए जा सकते थे,क्या शासन की स्वीकृति के बाद वही मुद्दा अब भाजपा के लिए उपलब्धि का मुद्दा बन गया है? हालांकि,यह राजनीतिक आकलन है और इसका अंतिम असर चुनाव में जनता के रुख से ही तय होगा,फिलहाल इतना जरूर है कि सड़क चौड़ीकरण की मांग को लेकर लंबे समय से चली आ रही राजनीतिक बहस में अब सत्ता पक्ष के पास दिखाने के लिए शासन की स्वीकृति का दस्तावेज मौजूद है।

विधायक भैयालाल राजवाड़े के प्रयासों को दिया जा रहा श्रेय

सड़क चौड़ीकरण की स्वीकृति के बाद भाजपा संगठन ने इसका श्रेय स्थानीय विधायक भैयालाल राजवाड़े के प्रयासों को दिया है, भाजपा जिला अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी की ओर से जारी प्रतिक्रिया में मुख्यमंत्री,वित्त मंत्री,प्रभारी मंत्री और विधायक के प्रति आभार जताया गया है,भाजपा का कहना है कि प्रदेश में सरकार बनने के बाद विधायक ने सड़क चौड़ीकरण को प्राथमिकता में रखते हुए शासन स्तर पर लगातार प्रयास किए,मुख्यमंत्री और वित्त विभाग तक इस मांग को पहुंचाने तथा परियोजना को स्वीकृति दिलाने के लिए लगातार प्रयास किए गए,वहीं भाजपा ने इसे वर्षों पहले शहर के युवाओं द्वारा उठाई गई मांग से भी जोड़ते हुए कहा है कि वर्ष 2020, 2021 और 2022 के दौरान युवाओं ने सड़क चौड़ीकरण की मांग को लेकर आवाज उठाई थी,संगठन के अनुसार उस समय भाजपा पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने भी इस मांग का समर्थन किया था,इस लिहाज से भाजपा अब इसे सरकार,विधायक,संगठन और शहरवासियों के सामूहिक प्रयास का परिणाम बता रही है।

क्या चुनावी वर्ष में बड़ा मुद्दा बनने से पहले ही भाजपा ने खत्म कर दिया सवाल?

सड़क चौड़ीकरण की मांग को लेकर बैकुंठपुर की राजनीति में लंबे समय से चर्चा होती रही है,शहर का बढ़ता यातायात,संकरी सड़कें और भविष्य में शहर के विस्तार की जरूरत को देखते हुए यह मांग लगातार उठती रही,यही वजह है कि राजनीतिक दृष्टि से भी यह सवाल महत्वपूर्ण है कि यदि सड़क चौड़ीकरण की स्वीकृति नहीं मिलती तो क्या आगामी नगरीय चुनाव में यह भाजपा के खिलाफ एक बड़ा स्थानीय मुद्दा बन सकता था? विपक्ष के लिए यह कहना आसान होता कि शहर की वर्षों पुरानी मांग पूरी नहीं हुई,युवाओं और व्यापारियों की मांग का हवाला देकर सत्ता पक्ष से जवाब मांगा जा सकता था,लेकिन अब स्थिति बदल गई है। शासन ने परियोजना को प्रशासनिक स्वीकृति दे दी है और भाजपा के पास जनता के सामने रखने के लिए सरकारी आदेश मौजूद है,इसलिए राजनीतिक रूप से भाजपा को निश्चित तौर पर एक ऐसा मुद्दा मिल गया है,जिसे वह 'मांग से स्वीकृति तक' की अपनी उपलब्धि के तौर पर प्रस्तुत कर सकती है,हालांकि इसका यह अर्थ नहीं कि सड़क चौड़ीकरण का मुद्दा पूरी तरह समाप्त हो गया,अब विपक्ष के पास स्वीकृति के बाद निविदा कब होगी,निर्माण कब शुरू होगा, काम कितने समय में पूरा होगा और गुणवत्ता कैसी रहेगी, जैसे सवाल उठाने का अवसर रहेगा।

अब असली परीक्षा स्वीकृति के बाद

सरकारी आदेश में परियोजना को लेकर कई महत्वपूर्ण शर्तें रखी गई हैं, आदेश के अनुसार तकनीकी स्वीकृति मिलने के बाद ही निविदा आमंत्रित की जाएगी, ड्राइंग और डिजाइन का सक्षम अधिकारी से अनुमोदन भी आवश्यक होगा, इसके अलावा प्रस्तावित निर्माण के लिए कम से कम 90 प्रतिशत बाधारहित भूमि उपलब्ध होने की शर्त रखी गई है, आदेश में यह भी कहा गया है कि निविदा प्रक्रिया निष्पक्ष एवं पारदर्शी हो और निर्धारित नियमों का पालन किया जाए, स्वीकृत बजट की सीमा में ही व्यय सुनिश्चित करने तथा निर्माण कार्य में गुणवत्ता बनाए रखने के निर्देश दिए गए हैं, यदि कार्य के दौरान स्वीकृत राशि या प्रस्तावित कार्य में निर्धारित सीमा से अधिक वृद्धि होती है अथवा नया कार्य जोड़ा जाता है तो उसके लिए नियमानुसार पुनरीक्षित प्रशासनिक स्वीकृति लेना आवश्यक होगा।

अब सवाल यह नहीं कि सड़क चौड़ी होगी या नहीं,सवाल यह है कि कब होगी?

बैकुंठपुर की सड़क चौड़ीकरण परियोजना को 88.51 करोड़ रुपये से अधिक की प्रशासनिक स्वीकृति मिलने के बाद वर्षों पुरानी मांग ने एक महत्वपूर्ण पड़ाव जरूर पार कर लिया है,भाजपा ने इसका स्वागत करते हुए इसे विधायक भैयालाल राजवाड़े के प्रयासों और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की सरकार की उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया है, राजनीतिक दृष्टि से देखें तो नगरीय चुनाव के पहले यह स्वीकृति भाजपा के लिए निश्चित रूप से एक मजबूत स्थानीय उपलब्धि बन सकती है, जिस मुद्दे को विपक्ष सत्ता पक्ष के खिलाफ इस्तेमाल कर सकता था,अब उसी मुद्दे पर भाजपा जनता के बीच जाकर यह दावा कर सकती है कि सरकार ने सड़क चौड़ीकरण के लिए 88 करोड़ रुपये से अधिक की प्रशासनिक स्वीकृति दिलाई है, लेकिन कहानी का अगला अध्याय अभी बाकी है,स्वीकृति के बाद निविदा,भूमि, तकनीकी प्रक्रिया और वास्तविक निर्माण–यही तय करेगा कि बैकुंठपुर के लोगों की वर्षों पुरानी मांग कागज से निकलकर सड़क पर कब दिखाई देती है,और शायद आने वाले समय में राजनीतिक सवाल भी इसी के आसपास होगा– 'स्वीकृति किसने दिलाई?' से ज्यादा महत्वपूर्ण सवाल होगा, 'काम कब शुरू हुआ और कब पूरा हुआ?

13 किलोमीटर सड़क का होगा 4- लेन विकास

लोक निर्माण विभाग के आदेश के अनुसार वित्तीय वर्ष 2026-27 के बजट में शामिल इस परियोजना के तहत जिला कोरिया में खरवत चौक (एनएच-43) से गेज नदी पुल होते हुए जमगहना मुख्य मार्ग (एनएच-43) तक 13 किलोमीटर सड़क निर्माण का प्रस्ताव है, इस मार्ग को 4-लेन के रूप में विकसित किया जाना है, परियोजना की प्रशासनिक स्वीकृति राशि 8851.29 लाख रुपये निर्धारित की गई है, यहां एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि शासन के दस्तावेज में इसे प्रशासकीय स्वीकृति कहा गया है, इसलिए इसे सीधे तौर पर निर्माण पूरा होने या पूरी राशि तत्काल जारी हो जाने के रूप में प्रस्तुत करना सही नहीं होगा, परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए तकनीकी स्वीकृति, डिजाइन अनुमोदन, निविदा और भूमि से संबंधित आवश्यक प्रक्रियाएं पूरी करनी होंगी।

स्वीकृति के बाद भाजपा ने घड़ी चौक पर मनाया जश्न

शासन की स्वीकृति की जानकारी सामने आने के बाद भाजपा पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं में उत्साह देखने को मिला, बैकुंठपुर के घड़ी चौक में आतिशबाजी कर और मिष्ठान वितरण कर सड़क चौड़ीकरण की स्वीकृति का जश्न मनाया गया, इस दौरान भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, वित्त मंत्री ओपी चौधरी, बैकुंठपुर विधायक भैयालाल राजवाड़े तथा भाजपा जिला अध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी के प्रति धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया, भाजपा की ओर से इस स्वीकृति को बैकुंठपुर शहर के विकास की दिशा में बड़ी उपलब्धि बताया जा रहा है, पार्टी का कहना है कि शहर की वर्षों पुरानी मांग को शासन तक पहुंचाने और उसके लिए लगातार प्रयास करने में स्थानीय विधायक की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

शहर के युवाओं और व्यापारियों की नजर अब निर्माण पर

स्वीकृति के बाद शहरवासियों में उम्मीद जरूर बढ़ी है,लेकिन वर्षों से इस सड़क का इंतजार कर रहे लोगों की निगाह अब अगले चरण पर है,लोगों के लिए अब सबसे बड़ा सवाल यह होगा कि निविदा प्रक्रिया कब पूरी होती है और जमीन पर काम कब शुरू होता है,सड़क चौड़ीकरण पूरा होने के बाद इससे बैकुंठपुर शहर में यातायात व्यवस्था को बेहतर करने, व्यापारिक गतिविधियों को गति देने और भविष्य की बढ़ती आबादी एवं वाहनों के दबाव को संभालने में मदद मिलने की उम्मीद है,भाजपा इसे विकास की दिशा में बड़ा कदम बता रही है, वहीं राजनीतिक तौर पर यह उपलब्धि स्थानीय विधायक भैयालाल राजवाड़े के लिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है,क्योंकि जिस मांग को लेकर उन्हें पहले आलोचनाओं का सामना करना पड़ा, उसी मांग की अब शासन स्तर पर स्वीकृति सामने आ चुकी है।

किसानों के हित में बड़ी पहल,कोडांगी नहर के जीर्णोद्धार को मिली स्वीकृति

पोंडीडीह-कोडांगी क्षेत्र के किसानों का लंबा इंतजार खत्म...बारिश के बाद शुरू होगा निर्माण कार्य

-संवाददाता-

खड़गवां,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

क्षेत्र के किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण और राहत भरी खबर सामने आई है,लंबे समय से जर्जर हालत में पड़ी पोंडीडीह-कोडांगी क्षेत्र से होकर गुजरने वाली कोडांगी नहर के जीर्णोद्धार कार्य को आखिरकार स्वीकृति मिल गई है, बारिश का मौसम समाप्त होने के बाद नहर के निर्माण एवं जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ किए जाने की बात कही गई है।

जनपद सदस्य एवं सहकारिता एवं उद्योग समिति के सभापति युगांतर श्रीवास्तव ने बताया कि कोडांगी नहर की जर्जर स्थिति को लेकर लगातार किसानों की आवाज प्रशासन एवं संबंधित विभाग तक पहुंचाई जाती रही, जनपद पंचायत की सामान्य सभा की बैठकों में भी कई बार नहर की बदहाल स्थिति का मुद्दा उठाते हुए इसके तत्काल मरम्मत एवं जीर्णोद्धार की मांग रखी गई, उन्होंने बताया कि इस गंभीर समस्या के संबंध में तत्कालीन कलेक्टर डॉ. राहुल वेंकट को भी पत्र के माध्यम से अवगत कराया गया था, किसानों की समस्या को गंभीरता से लेते हुए तत्कालीन कलेक्टर द्वारा संबंधित विभाग को आवश्यक कार्रवाई करने और कार्य शीघ्र प्रारंभ कराने के निर्देश दिए गए थे।

युगांतर श्रीवास्तव
जनपद सदस्य एवं सभापति, सहकारिता एवं उद्योग समिति

किसानों के लिए सिंचाई व्यवस्था होगी मजबूत

कोडांगी क्षेत्र के किसानों को लंबे समय से नहर की खराब स्थिति के कारण सिंचाई संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था, नहर के जीर्णोद्धार की स्वीकृति मिलने के बाद अब क्षेत्र के किसानों को बेहतर सिंचाई सुविधा मिलने की उम्मीद जगी है, इससे कृषि कार्य को मजबूती मिलने के साथ ही किसानों को राहत मिलने की संभावना है, युगांतर श्रीवास्तव ने कहा कि किसानों के लंबे इंतजार के बाद नहर के जीर्णोद्धार को स्वीकृति मिलना क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, उन्होंने किसानों की समस्या को गंभीरता से लेते हुए आवश्यक कार्रवाई के निर्देश देने के लिए तत्कालीन कलेक्टर डॉ. राहुल वेंकट के प्रति आभार भी व्यक्त किया, क्षेत्रवासियों और किसानों की निगाहें बारिश के बाद शुरू होने वाले निर्माण कार्य पर टिकी हैं, किसानों को उम्मीद है कि नहर का जीर्णोद्धार समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरा किया जाएगा, ताकि आने वाले समय में सिंचाई के लिए उन्हें किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

CMYK

शिवप्रसादनगर में रकबा बढ़ा,धान बिका...खबरें भी छपीं,फिर भी प्रशासन की आंखें बंद!

शिवप्रसादनगर में रकबा बढ़ा,धान बिका और खबरें भी छपीं...फिर भी प्रशासन की आंखें क्यों नहीं खुलीं?

23 किसानों के नाम पर 67.33 हेक्टेयर अतिरिक्त रकबे का आरोप, 4728.80 क्विंटल धान बिक्री पर सवाल

खबरें लगातार प्रकाशित होती रहीं, दस्तावेज सामने आते रहे...कार्रवाई की फाइल कहां अटकी?

20.94 हेक्टेयर जमीन से 88.27 हेक्टेयर पंजीयन! 4728 क्विंटल धान बिक्री ने खड़े किए बड़े सवाल

67.33 हेक्टेयर कथित फर्जी रकबा, 4728.80 क्विंटल धान बिक्री...फिर भी कार्रवाई का इंतजार

धान खरीदी का 'खेल' या कागजों का कमाल? 23 किसानों के नाम पर रकबा बढ़ने का आरोप

जमीन बदली, रकबा बढ़ा,धान बिका...कई खबरों के बाद भी जांच फाइल क्यों नहीं खुली?

-ओंकार पाण्डेय-

सूरजपुर,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

सूरजपुर जिले के ओड़गी ब्लॉक की शिवप्रसादनगर धान खरीदी समिति से जुड़ा मामला अब सिर्फ धान खरीदी में कथित गड़बड़ी का मामला नहीं रह गया है,यहां सवाल जमीन के रकबे से शुरू होकर किसान पंजीयन,धान खरीदी,बैंक ऋण,फसल बीमा,भूमि हस्तांतरण और प्रशासनिक कार्रवाई तक पहुंच गया है, सबसे दिलचस्प बात यह है कि मामले से जुड़े आरोप और दस्तावेज पहले भी कई बार खबरों के माध्यम से सार्वजनिक किए जा चुके हैं, लेकिन कार्रवाई के मोर्चे पर अब तक वह तेजी दिखाई नहीं दी,जिसकी उम्मीद ऐसे गंभीर आरोपों के बाद की जाती है।

कागजों में यदि आंकड़े सच हैं तो कहानी किसी फिल्मी पटकथा से कम नहीं लगती—वास्तविक रकबा 20.94 हेक्टेयर, पंजीयन रकबा 88.27 हेक्टेयर और धान बिक्री 4728.80 क्विंटल, यानी 67.33 हेक्टेयर अतिरिक्त रकबे का सवाल सामने है। अब सवाल यह है कि खेत की जमीन बढ़ी कैसे? क्या कागज पर खेतों में ऐसी उपजाऊ मिट्टी है जो सरकारी रिकॉर्ड देखते ही अचानक फैल जाती है? बेशक, यह व्यंग्य है,लेकिन असली सवाल बेहद गंभीर है–यदि यह अंतर रिकॉर्ड में मौजूद है तो इसकी जिम्मेदारी किसकी है और इसकी जांच अब तक निर्णायक स्तर तक क्यों नहीं पहुंची?

20.94 हेक्टेयर से 88.27 हेक्टेयर—कागजों में जमीन का 'विकास' कैसे हुआ?- शिकायत में उपलब्ध विवरण के अनुसार 23 किसानों का वास्तविक रकबा कुल 20.94 हेक्टेयर बताया गया है, इसके मुकाबले समिति के रिकॉर्ड में कुल 88.27 हेक्टेयर रकबा दर्ज होने का आरोप है, अर्थात 67.33 हेक्टेयर अतिरिक्त रकबे का सवाल सामने आता है,अब प्रशासन को सिर्फ एक सवाल का जवाब देना है,यह अतिरिक्त रकबा आया कहां से? यदि यह राजस्व रिकॉर्ड में है तो किसके नाम है? यदि राजस्व रिकॉर्ड में नहीं है तो समिति के पंजीयन में कैसे आया? यदि पंजीयन ऑनलाइन रिकॉर्ड से सत्यापित हुआ था तो इतनी बड़ी विसंगति कैसे बच गई? और यदि सत्यापन हुआ ही नहीं तो फिर धान खरीदी किस आधार पर हुई? यहीं से मामला गंभीर हो जाता है।

खबरें छपीं,दस्तावेज सामने आए...फिर प्रशासन की फाइल क्यों सोती रही?- इस पूरे मामले का सबसे व्यंग्यात्मक पहलू यही है कि मामला पहली बार सामने नहीं आया है, पूर्व में भी इस प्रकरण को लेकर कई बार खबरें प्रकाशित की गईं,आरोपों और दस्तावेजों को सार्वजनिक किया गया,सवाल उठाए गए,लेकिन कार्रवाई की तस्वीर अब भी धुंधली है,सरकारी व्यवस्था में आम आदमी की छोटी सी शिकायत पर कभी-कभी दस्तावेजों की पूरी बारात निकल पड़ती है–आवेदन,पावती,जांच, बयान,पंचनामा और फिर दूसरी जांच,लेकिन यहां सवाल है कि जब मामला सरकारी धान खरीदी और हजारों क्विंटल धान से जुड़ा बताया जा रहा है, तो जांच की फाइल आखिर किस मौसम का इंतजार कर रही है? धान की फसल हर साल आती है, खरीदी हर साल होती है,लेकिन जांच की गति देखकर लगता है कि फाइल ने शायद मानसून में चलना सीखा ही नहीं,हालांकि यह भी स्पष्ट है कि केवल समाचार प्रकाशित होना किसी व्यक्ति को दोषी साबित नहीं करता,लेकिन खबरों में उठे गंभीर और दस्तावेज-आधारित सवालों का प्रशासनिक सत्यापन तो होना ही चाहिए।

सवाल समिति से आगे बढ़कर अधिकारियों तक-यदि पंजीयन में गलत रकबा दर्ज हुआ तो इसकी जिम्मेदारी केवल किसान की नहीं मानी जा सकती,यह पता लगाना जरूरी होगा कि पंजीयन किसने किया, सत्यापन किसने किया और अंतिम रूप से रिकॉर्ड को किसने स्वीकार किया,शिकायत में समिति प्रबंधक तथा धान खरीदी प्रभारी सोहराब अंसारी और साधना कुशवाहा की भूमिका पर आरोप लगाए गए हैं,इन आरोपों को जांच का विषय माना जाना चाहिए,निष्कर्ष नहीं,जांच में यह स्पष्ट होना चाहिए कि संबंधित लोगों की वास्तविक भूमिका क्या थी,किस स्तर पर रिकॉर्ड तैयार हुआ और धान खरीदी की अनुमति किस आधार पर मिली।

साधना कुशवाहा का पुराना मामला भी फिर चर्चा में- शिकायत में साधना कुशवाहा से जुड़े पूर्व प्रकरण का भी उल्लेख किया गया है, आरोप है कि पशुपालन से संबंधित दो करोड़ रुपये से अधिक के कथित वितरण के मामले में उनके विरुद्ध कार्रवाई हुई थी,उन्हें जेल भेजे जाने और समिति के कार्य से बर्खास्त किए जाने की बात कही गई है,यह तथ्य भी आधिकारिक रिकॉर्ड से सत्यापित किया जाना चाहिए,यदि पूर्व में किसी गंभीर वित्तीय मामले में कार्रवाई हुई थी तो वर्तमान मामले की जांच करते समय उस रिकॉर्ड को भी सामने रखना स्वाभाविक होगा।

फसल बीमा और ऋण वितरण के आरोप भी कम गंभीर नहीं-शिकायत में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की राशि के कथित गलत आहरण और किसानों के नाम पर दो करोड़ रुपये से अधिक के पशुपालन ऋण वितरण का भी आरोप लगाया गया है,इसके अलावा 20 प्रतिशत कमीशन लिए जाने की बात भी कही गई है,यदि ये आरोप सही हैं तो मामला केवल धान खरीदी तक सीमित नहीं रहेगा,तब बैंकिंग रिकॉर्ड,बीमा दावे,किसान खातों और भुगतान की पूरी श्रृंखला की जांच जरूरी होगी,यानी एक तरफ खेत, दूसरी तरफ बैंक और बीच में धान की बोरी–तीनों का हिसाब एक साथ मिलाना पड़ेगा।

जमीन से धान तक कोई कड़ी है या अलग-अलग मामले?-स्थानीय स्तर पर यह चर्चा है कि जमीन हस्तांतरण,बैंक ऋण,फसल बीमा और धान खरीदी में कथित अनियमितताएं एक-दूसरे से जुड़ी हो सकती हैं,लेकिन चर्चा और प्रमाण में फर्क होता है,इसलिए स्वतंत्र जांच का महत्व यहीं बढ़ जाता है,यदि सभी मामले अलग-अलग हैं तो रिकॉर्ड से यह स्पष्ट हो जाएगा,और यदि इनके बीच कोई कड़ी है तो बैंकिंग,राजस्व और धान खरीदी रिकॉर्ड के मिलान से वह भी सामने आ सकती है।

अब जांच हो तो इन सवालों का जवाब मिले-पूरे मामले में जांच के दौरान कम से कम इन बिंदुओं को देखा जाना चाहिए,23 किसानों के वास्तविक रकबे का राजस्व रिकॉर्ड से मिलान, 67.33 हेक्टेयर अतिरिक्त बताए जा रहे रकबे की जांच,4728.80 क्विंटल धान बिक्री का सत्यापन,किसान पंजीयन और धान खरीदी रिकॉर्ड का मिलान,धान बिक्री की राशि किसके खातों में गई,इसका परीक्षण,समिति प्रबंधक और खरीदी प्रभारियों की भूमिका, संबंधित भूमि के हस्तांतरण की वैधानिकता, बैंकों की एनओसी और ऋण स्थिति,फसल बीमा भुगतान का सत्यापन,पशुपालन ऋण वितरण और कथित कमीशन की जांच,आवश्यकता होने पर ईडब्ल्यूओ से स्वतंत्र जांच आवश्यक है।

अब प्रशासन के सामने दो ही रास्ते-इस मामले में प्रशासन चाहे तो बहुत आसानी से तस्वीर साफ कर सकता है,पहला रास्ताः दस्तावेजों की जांच कर यह बताया जाए कि लगाए गए आरोप गलत हैं और वास्तविक रिकॉर्ड क्या है, दूसरा रास्ताः यदि रिकॉर्ड में गंभीर विसंगतियां मिलती हैं तो जिम्मेदारों की भूमिका तय कर नियमानुसार कार्रवाई की जाए,लेकिन लगातार खबरें प्रकाशित होती रहें,दस्तावेज सामने आते रहें और प्रशासन की तरफ से न जांच की स्पष्ट जानकारी मिले,न कार्रवाई की–तो सवाल उठना स्वाभाविक है,आखिर फाइल को भी कभी तो खेत तक पहुंचना होगा,क्योंकि यहां सवाल सिर्फ कागज पर बढ़े 67.33 हेक्टेयर रकबे का नहीं है,सवाल 4728.80 क्विंटल धान का है,सवाल किसानों के नाम पर हुए पंजीयन का है,सवाल सरकारी भुगतान का है, सवाल बैंक ऋण का है,सवाल जमीन हस्तांतरण का है,और सबसे बड़ा सवाल–जब इन सब पर पहले भी खबरें प्रकाशित हो चुकी हैं और दस्तावेज सामने रखे जा चुके हैं,तो प्रशासन की जांच अब तक निर्णायक मोड़ तक क्यों नहीं पहुंची? यदि सब कुछ नियम से हुआ है तो जांच से डर कैसा? और यदि नियम टूटे हैं तो कार्रवाई में देरी क्यों? अब शिवप्रसादनगर की जनता शायद यही जानना चाहती है कि धान की बोरियों का हिसाब कब होगा और उन बोरियों तक पहुंचने वाले कागजों की जिम्मेदारी आखिर किसकी तय होगी?

4728.80 क्विंटल धान

आखिर किस खेत में उगा?- शिकायत के अनुसार इन्हीं पंजीकृत रकबों के आधार पर 4728.80 क्विंटल धान की बिक्री दर्शाई गई,यही वह आंकड़ा है जो पूरे मामले को साधारण रिकॉर्ड त्रुटि से निकालकर जांच के बड़े दायरे में ले जाता है,मसलन,उपलब्ध तालिका में दोसल मो. का वास्तविक रकबा 0.21 हेक्टेयर बताया गया,जबकि पंजीयन रकबा 2.82 हेक्टेयर और धान बिक्री 145.20 क्विंटल दर्ज होने का दावा है, कृष्णा सिंह के मामले में वास्तविक रकबा 0.29 हेक्टेयर, पंजीयन 2.57 हेक्टेयर और धान बिक्री 126.40 क्विंटल बताई गई है,रामसाय के नाम 0.84 हेक्टेयर वास्तविक रकबे के मुकाबले 4.36 हेक्टेयर पंजीयन और 404.40 क्विंटल धान बिक्री का विवरण दिया गया है,संताबाई के मामले में 0.45 हेक्टेयर वास्तविक रकबे के मुकाबले 6.76 हेक्टेयर पंजीयन और 366.40 क्विंटल धान बिक्री बताई गई है,शिवनाथ के मामले में 0.54 हेक्टेयर वास्तविक रकबे के मुकाबले 5.95 हेक्टेयर पंजीयन तथा 419.60 क्विंटल धान बिक्री का दावा है,विजय कुमार के मामले में तो वास्तविक रकबा 0.36 हेक्टेयर,पंजीयन 4.66 हेक्टेयर और धान बिक्री 441.20 क्विंटल बताई गई है, इन आंकड़ों की आधिकारिक जांच जरूरी है,लेकिन अगर ये आंकड़े सही हैं तो सवाल यह नहीं कि 'कुछ गलती हुई?',बल्कि सवाल यह होगा कि इतनी बड़ी गलती कई स्तरों से गुजरकर धान खरीदी तक कैसे पहुंची?

जमीन बदली, बैंक ऋण था ...और धान भी बिक गया...

संयोग या जांच का विषय? मामले का दूसरा सिरा ग्राम सोनपुर,तहसील भैयाथान की लगभग 3.13 हेक्टेयर यानी 7.7 एकड़ कृषि भूमि से जुड़ा बताया गया है, शिकायत के अनुसार यह भूमि पहले जरीफुल्ला के नाम थी और बाद में हदीस मोहम्मद,रिजवान अंसारी और साधना कुशवाहा के नाम दर्ज होने की बात कही गई है,भूमि हस्तांतरण के समय और संबंधित आपराधिक मामलों की परिस्थितियों को लेकर भी सवाल उठाए गए हैं,इसके साथ ही संबंधित जमीन पर एचडीएफसी बैंक, जिला सहकारी केंद्रीय बैंक और छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण बैंक के ऋण दर्ज होने का दावा है, तो अगला सवाल बिल्कुल स्वाभाविक है यदि जमीन पर ऋण या बंधक था तो रजिस्ट्री से पहले बैंक की एनओसी क्या थी? यदि एनओसी थी तो सामने लाई जाए, यदि ऋण चुका दिया गया था तो भुगतान का रिकॉर्ड सामने आए, यदि बंधक हटा था तो उसका दस्तावेज दिखे,क्योंकि जमीन की रजिस्ट्री कोई ऐसा कागज नहीं जिसे चाय की दुकान पर बैठकर मौखिक रूप से बदल दिया जाए।

तालिका के अनुसार कुल स्थिति

- कुल वास्तविक रकबाः 20.94 हेक्टेयर
- दर्ज फर्जी रकबाः 67.33 हेक्टेयर
- कुल पंजीयन रकबाः 88.27 हेक्टेयर
- कुल धान बिक्रीः 4728.80 क्विंटल

आरोप है कि समिति प्रबंधक एवं धान खरीदी प्रभारी ने कथित रूप से बैंक से जुड़े व्यक्तियों के साथ मिलीभगत कर अतिरिक्त रकबा जोड़कर धान बिक्री दर्शाई।

नामजद किसानों के उदाहरण (तालिका अनुसार)

पंजीयन कोड	किसान का नाम	सही रकबा	दर्ज फर्जी रकबा	कुल पंजीयन	कुल धान बिक्री (क्विंटल)
TF3700080101875	दोसल मो.	0.21	2.61	2.82	145.2
TF3700080101640	कृष्णा सिंह	0.29	2.28	2.57	126.4
TF3700080101602	रामसाय	0.84	3.52	4.36	404.4
TF3700080101648	संताबाई	0.45	6.31	6.76	366.4
TF3700080101701	शिवनाथ	0.54	5.41	5.95	419.6
TF3900340101467	धनूराम	2.05	2.48	4.53	418.8
TF3728102317198	विजय कुमार	0.36	4.3	4.66	441.2

खौफनाक भूतों का सामना करेंगे अजय देवगन

सुपरस्टार अजय देवगन ने अपनी एक और नई हॉरर थ्रिलर फिल्म की शूटिंग का आगाज कर दिया है। हिंदी सिनेमा के सुपरस्टार अजय देवगन का नाम इस वक्त अपनी नई फिल्मों को लेकर चर्चा में बना हुआ है। दृश्यम 3 की रिलीज से पहले अब अजय ने अपनी एक अपकमिंग हॉरर थ्रिलर मूवी की शूटिंग शुरू कर दी है, जिसकी जानकारी अभिनेता ने सोशल मीडिया पर दी है। गौर करने वाली बात ये है कि अजय देवगन की ये भूतिया फिल्म शैतान 2 नहीं है, बल्कि एक नए डायरेक्टर संग एक्टर ने हाथ मिलाया है। आइए इस मामले के बारे में थोड़ा और डिटेल्स में जानते हैं-

शुरू हुई अजय देवगन की नई फिल्म की शूटिंग

बीते दिनों से अजय देवगन का एक अनटाइटल हॉरर थ्रिलर को लेकर सुर्खियां बटोर रहा था। अब इस मामले की आधिकारिक पुष्टि खुद अजय द्वारा कर दी गई है। उन्होंने बुधवार को अपने ऑफिशियल एक्स हैंडल पर फिल्म की शूटिंग होने को लेकर लेटेस्ट अपडेट दिया है। एक्टर ने लिखा है- डर का माहौल होने वाला है। निर्देशक जुगराज रोहित के निर्देशन में हमारी अनटाइटल हॉरर थ्रिलर फिल्म का आरंभ आज से हो रहा है। इसके अलावा अजय देवगन ने मूवी की पूरी टीम के साथ तस्वीरें भी शेयर की हैं, जिनमें दृश्यम 3 के डायरेक्टर अभिषेक पाठक और अजय देवगन के भतीजे और निर्माता दानिश देवगन की झलक भी देखने को मिल रही है। इस तरह से

अजय ने ऑफिशियल तरीके से अपनी नई फिल्म की घोषणा कर दी है।
इससे पहले अजय देवगन भूत,काल और शैतान जैसी कई आइकॉनिक हॉरर थ्रिलर फिल्मों के जरिए भूतों का सामना कर चुके हैं। इस कड़ी में अब उनकी इस अनटाइटल नई मूवी का नाम भी शामिल हो रहा है।

अजय की अगली फिल्म

बात की जाए अजय देवगन की अगली फिल्म के बारे में तो इस साल धमाल 4 की सफलता के बाद अजय आपको फिल्म दृश्यम 3 में नजर आएंगे, जिसे 2 अक्टूबर 2026 को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज किया जाना है।

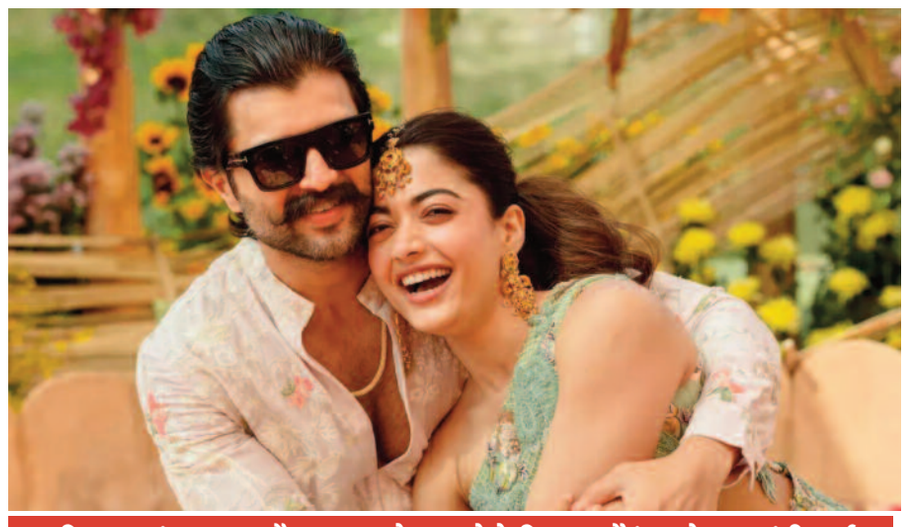

रश्मिका मंदाना का हौसला बढ़ाते हुए बोले विजय : फैंस को कराएंगी गर्व

टॉलीवुड स्टार विजय देवरकोंडा अपनी पार्टनर रश्मिका मंदाना के लिए चीयरलीडर बन गए। यह तब हुआ जब मंगलवार को मेकर्स ने रश्मिका की बहुप्रतीक्षित ड्रामा फिल्म मायसा की रिलीज़ डेट का ऐलान किया। अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल की स्टोरीज़ में अनाउंसमेंट पोस्टर शेयर करते हुए विजय ने रश्मिका की तारीफ़ की और कहा, वायलेंट पिल्ला (रेड हार्ट इमोजी) भगवान आपके साथ हों =) आप इस फ़िल्म से अपने सभी प्यारे फ़ैन्स को फिर से गर्व महसूस कराएंगी। मेकर्स ने बताया कि मायसा इस साल 27 नवंबर को दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी। प्रोड्यूसर्स अनफ़ॉर्मूला फ़िल्म्स ने अपने ऑफिशियल सोशल मीडिया पर लिखा,स्वभाव से मज़बूत। अपनी मज़ी से निडर। हौसले से अटूट। रश्मिका मंदाना के साथ मायसा की दुनिया का अनुभव करने के लिए तैयार हो जाइए,जैसा पहले कभी नहीं हुआ। दुनिया भर के सिनेमाघरों में 27.11.26 को। बता दें कि मायसा की शूटिंग के दौरान रश्मिका को हिप टेंडन में गंभीर चोट लग गई थी। यह दुर्भाग्यपूर्ण हादसा एक हाई-एनर्जी डांस सीक्वेंस के दौरान हुआ था। उनके दाहिने हिप के चार टेंडन में से एक अलग हो गया था। कुछ समय तक घर पर ठीक होने के बाद, रश्मिका ने रविवार को घोषणा की कि वह जल्द ही काम पर लौटेंगी। एनिमल एक्ट्रेस ने ठीक होने के दौरान अपने प्रियजनों के साथ बिताए पलों की कुछ झलकियाँ शेयर कीं - जिसमें प्रार्थना करना,फिल्में देखना, पहेलियाँ सुलझाना और अपने पालतू जानवरों के साथ समय बिताना शामिल है। रश्मिका ने कहा कि वह घर पर बिताए समय के दौरान की गई मज़ेदार चीज़ों को बहुत याद करेंगी। पुष्पा एक्ट्रेस ने फ़ोटो-शेयरिंग ऐप पर लिखा,मैं जल्द ही काम पर लौट रही हूँ और मैं निश्चित रूप से इन सभी चीज़ों को याद करूँगी! मायसा के अलावा, रश्मिका आने वाली पीरियड ड्रामा फिल्म राणाबाली में भी विजय के साथ स्क्रीन शेयर करेंगी। एक शादीशुदा जोड़े के तौर पर यह उनका पहला प्रोजेक्ट है। इससे पहले,रश्मिका और विजय गीता गोविंदम और डियर कॉमरेड फिल्मों में साथ नज़र आ चुके हैं, जिससे राणाबाली उनका तीसरा प्रोफेशनल कोलैबोरेशन बन गया है।

दिशा पाटनी का अनुभव : आवारापन 2 की टीम के साथ काम करना खास

एक्ट्रेस दिशा पाटनी ने आवारापन 2 का हिस्सा बनने के लिए अपना आभार व्यक्त किया है। बुधवार को, बागी एक्ट्रेस ने इस बहुप्रतीक्षित फिल्म पर काम करने के अपने अनुभव के बारे में एक दिल को छू लेने वाला नोट शेयर किया। दिशा ने इस प्रोजेक्ट को मिले प्यार और समर्थन के लिए टीम और फैंस का शुक्रिया अदा किया। इंस्टाग्राम पर, उन्होंने फिल्म के साथ अपनी यात्रा की एक झलक शेयर की और उन लोगों के प्रति अपनी सराहना व्यक्त की जिनके साथ उन्होंने काम किया है। दिशा ने लिखा, ÷एक ऐसी कहानी बताने की इस यात्रा में इतने अद्भुत और खूबसूरत लोगों से जुड़कर आभारी महसूस कर रही हूँ जिसे हम सभी हमेशा संजोकर रखेंगे। इस टीम का हिस्सा बनना

हंसी,एक्शन और फुल ऑन एंटरटेनमेंट,प्रीति जिंटा और कुणाल खेमू की एक्शन-कॉमेडी वाइब का धमाकेदार ट्रेलर रिलीज

वाइब का धमाकेदार ट्रेलर जारी हो गया है। कुणाल खेमू द्वारा निर्देशित और प्रीति जिंटा स्टारर यह एक्शन-कॉमेडी फिल्म 18 सितंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज के लिए तैयार है। सिनेमाप्रेमियों के लिए मनोरंजन का बड़ा धमाका होने जा रहा है। अमेजन एमजीएम स्टूडियोज ने अपनी थिएट्रिकल फिल्म वाइब का आधिकारिक ट्रेलर जारी कर दिया है। यूट्यूब पर जारी इस ट्रेलर को दर्शकों की ओर से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिल रही है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी कुणाल खेमू द्वारा लिखित और निर्देशित यह फिल्म एक हाई-स्टेक्स एक्शन-कॉमेडी है, जिसकी कहानी दो आम दोस्तों के इर्द-गिर्द घूमती है। धोखे, भ्रम और अप्रत्याशित खतरों के बीच फंसे इन दोस्तों की सर्वाइवल स्किल्स और अटूट दोस्ती की कड़ी परीक्षा देखने को मिलने वाली है। ड्रोंगो फिल्म्स के बैनर तले कुणाल खेमू और चिराग निहलानी द्वारा निर्मित यह फिल्म 18 सितंबर 2026 को देशभर के सिनेमाघरों में दस्तक देगी। फिल्म में एक्शन, अनोखे किरदारों की सिचुएशनल कॉमेडी, धमाकेदार संगीत और एक बेहद अलग सिनेमाई मिजाज का तालमेल देखने को मिलेगा।

आम नागरिक बने अचानक हीरो

फिल्म के ट्रेलर में दर्शकों का परिचय हार्दिक (कुणाल खेमू) और उसके दोस्त बग्स (स्पर्श श्रीवास्तव) से होता है, जो अपनी सीधी-सादी जिंदगी जी रहे होते हैं। हालांकि, जब देश के सामने अचानक एक बड़ा आतंकी खतरा मंडराने लगता है तो परिस्थितियां उन्हें अचानक हीरो बनने पर मजबूर कर देती हैं। इस अनचाहे और खतरनाक गुप्त मिशन के लिए दोनों दोस्त बिल्कुल भी तैयार नहीं होते। उन्हें खुफिया एजेंट बनाकर मिशन पर भेजने का जिम्मा संभालती हैं मैडम एच,जिनका किरदार बॉलीवुड की लोकप्रिय अभिनेत्री प्रीति जी जिंटा निभा रही हैं। मैडम एच एक ऐसी सख्त और अपने देश के प्रति समर्पित अधिकारी हैं, जो किसी भी कीमत पर परिणाम हासिल करने में विश्वास रखती हैं। बिना किसी खास ट्रेनिंग और समझ के, दोनों आम युवक खतरनाक मिशन पर निकल पड़ते हैं, जिससे कई मजेदार और अफरा-तफरी भरे मोमेंट्स पैदा होते हैं।

तगड़ा स्टारकास्ट और अनदेखा अवतार

फिल्म वाइब की सबसे बड़ी यूएसपी इसकी अनूठी स्टारकास्ट और उनका नया अवतार है। प्रीति जी जिंटा लंबे समय बाद पर्दे पर एक मजबूत और दबंग एक्शन-कॉमेडी अवतार में नजर आ रही हैं। कुणाल खेमू और स्पर्श श्रीवास्तव की जोड़ी का कॉमिक टाइमिंग और नोकझोंक दर्शकों को हंसने पर मजबूर कर देता है। इसके अलावा फिल्म में वंशिका धीर मुख्य भूमिका में हैं, जबकि जाने-माने अभिनेता यशपाल शर्मा और भोजपुरी सिनेमा के पावरस्टार दिनेश लाल यादव (निरहुआ) भी बेहद अहम और दिलचस्प किरदारों में नजर आ रहे हैं। एक छोटे कैम्यो में शर्मिला टौगर भी नजर आ रही हैं।

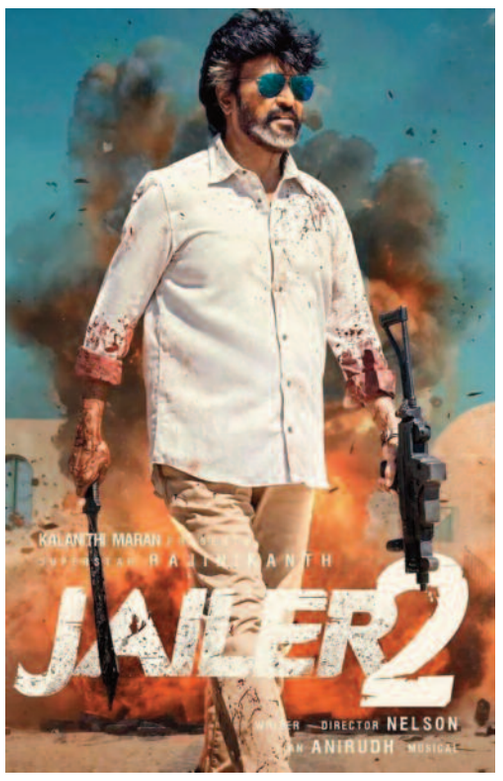

जेलर 2 : अक्टूबर में सिनेमाघरों में दहाड़ेगा टाइगर मुथुवेल पांडियन,

आ गई रजनीकांत की फिल्म की रिलीज डेट रजनीकांत की फिल्म जेलर 2 की रिलीज टलने की अफवाहों का सन पिक्चर्स ने खंडन किया है। यह फिल्म दशहरा के दौरान सिनेमाघरों में दस्तक देगी। पिछले कुछ दिनों में सोशल मीडिया पर कई तरह की खबरें सामने आईं कि रजनीकांत की फिल्म जेलर 2 की रिलीज टल सकती है। ऐसी अफवाहें थीं कि फिल्म के कई हिस्सों की रीशूटिंग हो रही है। हालांकि 2 सितंबर को जेलर 2 के निर्माताओं ने अपने आधिकारिक फेसबुक अकाउंट पर एक पोस्ट के जरिए इन खबरों का खंडन किया। मेकर्स ने इसकी रिलीज डेट अनाउंस करते हुए दर्शकों के चेहरे पर फिर से खुशी ला दी है। सन पिक्चर्स ने एक्स पर एक नई तस्वीर पोस्ट करते हुए पुष्टि की है कि जेलर 2 पोस्टपोन नहीं हुई है और 15 अक्टूबर को ही रिलीज होगी। कैप्शन में लिखा है,15 अक्टूबर अलाप्पारा केलाप्पुरोम (हम धूम मचाने वाले हैं)। अक्टूबर की यह तारीख दशहरा के दौरान पड़ रही है।

खेल समाचार

एशियन टेनिस बॉल क्रिकेट चैंपियनशिप के खिलाड़ियों को सिंधु की शुभकामनाएं

चेन्नई,02 सितम्बर 2026। भारतीय खेलों के लिए एक ऐतिहासिक पल में, तमिलनाडु इतिहास में पहली बार प्रतिष्ठित एशियन टेनिस बॉल क्रिकेट चैंपियनशिप 2026 की मेज़बानी करने जा रहा है। यह टूर्नामेंट टेनिस बॉल क्रिकेट फेडरेशन ऑफ़ इंडिया की देखरेख में तमिलनाडु टेनिस बॉल क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा आयोजित किया जा रहा है। टीबीसीएफ आई को युवा मामले और खेल मंत्रालय,स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ़ इंडिया और स्पोर्ट्स डेवलपमेंट अथॉरिटी ऑफ़ तमिलनाडु से आधिकारिक मान्यता प्राप्त है। इस टूर्नामेंट में लगभग 600 बेहतरीन खिलाड़ी हिस्सा लेंगे और 26 अक्टूबर से 29 अक्टूबर 2026 तक चेन्नई के करापक्कम स्थित केसीजी कॉलेज में चार दिनों तक कड़ा मुकाबला करेंगे। इस चैंपियनशिप के आधिकारिक लोगो और जर्सी का अनावरण चेन्नई के गिंडी स्थित होटल रामाडा में आयोजित एक समारोह में किया गया। इस कार्यक्रम में भारत की मशहूर बैडमिंटन स्टार और कई बार ओलंपिक पदक जीत चुकीं पीवी सिंधु मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल हुईं।

आईसीसी का बड़ा ऐलान,भारत को मिली पहली वूमेन्स चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी

नई दिल्ली,02 सितम्बर 2026। आईसीसी वूमेन्स चैंपियंस ट्रॉफी को लेकर बड़ा ऐलान किया है। आईसीसी ने पहली बार आयोजित होने वाली वूमेन्स चैंपियंस ट्रॉफी 2027 की मेजबानी भारत को सौंप दी है। इसके साथ ही टूर्नामेंट की तारीखों और वेन्यू का ऐलान भी कर दिया गया है। 6 टीमों वाला यह प्रतिष्ठित टूर्नामेंट अगले साल 14 से 28 फरवरी तक भारत में खेला जाएगा। आईसीसी के अनुसार, टूर्नामेंट के सभी मुकाबले मुंबई के क्रिकेट क्लब ऑफ इंडिया और वडोदरा के वडोदरा इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में आयोजित होंगे। इस टूर्नामेंट में भारत समेत दुनिया की 6 दिग्गज टीमें खिताब के लिए भिड़ेंगी।

पहले श्रीलंका में होना था आयोजन

आईसीसी वूमेन्स चैंपियंस ट्रॉफी 2027 का आयोजन पहले श्रीलंका में होना था,लेकिन आईसीसी की वार्षिक बैठक में तय सुधारों को लागू करने की प्रक्रिया जारी रहने के कारण टूर्नामेंट को भारत स्थानांतरित कर दिया गया। नए मेजबान के चयन के लिए आईसीसी ने बांग्लादेश, भारत और साउथ अफ्रीका के नामों पर विचार किया। इसके बाद भारत को मेजबानी के लिए चुना गया और 1 सितंबर को आईसीसी बोर्ड ने इस

फैसले को मंजूरी दे दी।
आईसीसी चेयरमैन जय शाह ने इसे महिला क्रिकेट के लिए एक रोमांचक नए दौर की शुरुआत बताया। उन्होंने कहा कि इस टूर्नामेंट से दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीमें एक बड़े मंच पर प्रतिस्पर्धा करेंगी और अन्य टीमों को भी रैंकिंग में ऊपर आने के लिए नई प्रेरणा मिलेगी। जय शाह ने कहा कि ढ्ढष्ठष्ट महिला चैंपियंस ट्रॉफी 2027 महिला क्रिकेट के लिए एक रोमांचक नए अध्याय की शुरुआत है। टूर्नामेंट के पहले संस्करण के तौर पर यह दुनिया की बेहतरीन टीमों को एक जबरदस्त और हाई लेवल मुकाबले के लिए एक साथ लाएगा। साथ ही, यह टीमों को रैंकिंग में ऊपर चढ़ने और वैश्विक मंच पर जगह बनाने के लिए और ज्यादा प्रेरित करेगा।

ये टीमें करेंगी शिरकत

इस टूर्नामेंट में भारत, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, साउथ अफ्रीका और श्रीलंका हिस्सा लेंगे। सभी मुकाबले टी20 आई प्रारूप में खेले जाएंगे। 6 टीमें राउंड-रॉबिन फॉर्मेट में एक-दूसरे से भिड़ेंगी, जिसके बाद शीर्ष दो टीमें 28 फरवरी को होने वाले फाइनल में जगह बनाएंगी। भारत महिला आईसीसी वर्ल्ड कप चैंपियन है, जबकि ऑस्ट्रेलिया ने हाल ही में इंग्लैंड में खेले गए महिला टी20 वर्ल्ड कप का खिताब अपने नाम किया है। ऐसे में पहली वूमेन्स चैंपियंस ट्रॉफी में दोनों टीमों के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिल सकती है।

दलीप ट्रॉफी की दोनों फाइनलिस्ट के नाम तय

नई दिल्ली,02 सितम्बर 2026। दलीप ट्रॉफी 2026 के फाइनल की दोनों टीमों के नाम तय हो गए हैं। ईस्ट जोन की टीम ने पहले सेमीफाइनल में सेंट्रल जोन को हराकर पहले ही अपनी जगह फाइनल में पक्की कर ली थी। अब साउथ जोन ने नॉर्थ जोन को हराकर अपनी सीट तय कर ली है। यानी अब फाइनल मैच में ईशान किशन और तिलक वर्मा की कप्तानी वाली टीमों का आमना सामना होगा।

6 सितंबर से चेन्नई में खेला जाएगा दलीप ट्रॉफी का फाइनल मैच

तिलक वर्मा की कप्तानी वाली साउथ जोन की टीम ने सेमीफाइल में कन्हैया वधावन की कप्तानी वाली नॉर्थ जोन की टीम को सात विकेट से हराकर दलीप ट्रॉफी के फाइनल में अपनी सीट पक्की कर ली। अब ईस्ट जोन और साउथ जोन के बीच फाइनल मैच 6 सितंबर से एमए चिदंबरम स्टेडियम में खेला

जाएगा। दोनों टीमें शानदार खेल दिखाने के बाद यहां तक पहुंची हैं। ऐसे में उम्मीद है कि फाइनल मैच भी काफी रोचक होगा। जो टीम अच्छा खेल दिखाएगी, वो इस खिताब को जीत जाएगी।

तिलक वर्मा ने पहली पारी में लगाया शतक,दूसरी में अर्धशतक लगाकर रहे नाबाद

साउथ जोन को फाइनल तक ले जाने में उसके कप्तान तिलक वर्मा की बड़ी भूमिका रही। सेमीफाइनल में साउथ जोन के खिलाफ पहली पारी में उन्होंने 166 रनों की नाबाद पारी खेली थी। इसके बाद जब वे दूसरी पारी में उतरे तो वहां भी उन्होंने 51 रनों की नाबाद पारी खेली और अपनी टीम को फाइनल का टिकट दिला दिया। इस बीच ईस्ट जोन की टीम में जहां एक ओर कप्तान ईशान किशन और वैभव सूर्यवंशी हैं, वहीं तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी भी इसी टीम के लिए खेल रहे हैं।

जबरदस्त होगी ईशान किशन और तिलक वर्मा के बीच की जंग

इस साल दलीप ट्रॉफी का आगाज 23 अगस्त से हुआ था। अब इसके फाइनल की दो टीमें मिल चुकी हैं। ईशान किशन अभी तक अपनी कप्तानी में एक भी डोमेस्टिक मैच नहीं हारे हैं। ऐसे में वे फाइनल जीतने के मजबूत दावेदार हैं। वहीं तिलक वर्मा ने जिस तरह की बल्लेबाजी की है, उससे नहीं लगता कि वे ट्रॉफी को इतनी आसानी से जाने देंगे। यानी फाइनल मैच काफी कड़ाकेदार रहने की उम्मीद की जा सकती है।

भारत-ब्राजील फुटबॉल मुकाबले के टिकटों की बिक्री शुरू

नई दिल्ली,02 सितम्बर 2026। ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन ने बुधवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में बताया कि 3 अक्टूबर को कोलकाता में होने वाले भारत और ब्राज़ील के बीच इंटरनेशनल फ्रेंडली मैच के टिकट बिक्री के लिए उपलब्ध हो गए हैं। पांच बार की वर्ल्ड चैंपियन ब्राज़ील, फुटबॉल में पुरुषों की सबसे सफल नेशनल टीम है। एआईएफएफ की प्रेस रिलीज़ के अनुसार, भारत, फुटबॉल इतिहास के सबसे बड़े मैचों में से एक में विवेकानंद युवा भारती क्रीड़ांगन में सेलेकाओ (ब्राज़ील की टीम) की मेज़बानी करेगा। यह मैच भारत के लिए अब तक की सबसे ऊंची रैंकिंग वाली विरोधी टीम के खिलाफ होगा, क्योंकि 1992 में फीफ ा वर्ल्ड रैंकिंग शुरू होने के बाद से भारत का सामना ऐसी टीम से नहीं हुआ है जिसकी रैंकिंग इतनी ऊंची हो; ब्राज़ील अभी पांचवें स्थान पर है। ज एक इंस्टाग्राम पोस्ट में ,ढ्ढस्रस्र ने लिखा, ÷इंतज़ार खत्म हुआ। भारत बनाम ब्राज़ील मैच में मिलते हैं। इस हाई-प्रोफाइल फ्रेंडली मैच के टिकट डिस्ट्रिक्ट ऐप पर उपलब्ध हैं। ब्राज़ील की विरासत ने दुनिया भर में फुटबॉल खिलाड़ियों की कई पीढ़ियों को प्रेरित किया है, जिसमें भारत के लाखों जुनूनी समर्थक भी शामिल हैं। ब्राज़ील के बाहर सबसे बड़े ब्राज़ीलियाई फैन बेस में से एक भारत में है। भारतीय सीनियर पुरुष नेशनल फुटबॉल टीम फीफ। पुरुष इंटरनेशनल मैच विंडो के दौरान 26 सितंबर को पनामा के खिलाफ भी एक इंटरनेशनल फ्रेंडली मैच खेलेगी। यह मैच बेंगलुरु के श्री कांतिरावा स्टेडियम में खेला जाएगा।

एक की मेज पर पूरा विभाग,दूसरे की पहुंच रायपुर तक!

बेनी राम और नितेश के इर्द-गिर्द घूमते सवाल, कुर्सी का कमाल या प्रभाव का जाल?

बेनी राम के पास प्रभारों का पहाड़,नितेश की रायपुर तक पकड़ की चर्चा,खाद्य एवं औषधि प्रशासन में 'प्रभाव' का खेल कितना गहरा?

अंबिकापुर की पोस्टिंग,रायपुर की दौड़ और कई शाखाओं की चाबी : बेनी राम-नितेश पर उठे सवाल,विभाग में आखिर किसका चलता है?

खाद्य एवं औषधि प्रशासन में 'दो पावर सेंटर' की चर्चा, बेनी राम के पास कई शाखाओं की चाबी, नितेश की रायपुर तक दौड़ पर सवाल...

एक को जिम्मेदारियों का अंबार, दूसरे की चर्चा से एक ही संभाग में मौजूदगी की चर्चा...प्रभार और पदस्थापना का खेल... नियमों से चलता है...या प्रभाव से?

खाद्य एवं औषधि प्रशासन में दो चर्चित चेहरे,बेनी राम साहू और नितेश मिश्रा पर सवालों का घेरा

एक के पास कई शाखाओं की चाबी,दूसरे की लंबे समय तक एक ही संभाग में पदस्थापना की चर्चा...क्या यह महज प्रशासनिक संयोग है या प्रभाव की कहानी?

-न्यूज डेस्क-

रायपुर,02 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)। खाद्य एवं औषधि प्रशासन में इन दिनों दो नाम सबसे ज्यादा चर्चा में हैं,एक तरफ सहायक औषधि नियंत्रक बेनी राम साहू, जिनके पास एक साथ कई महत्वपूर्ण शाखाओं की जिम्मेदारी होने का दस्तावेज सामने है,दूसरी तरफ खाद्य विभाग के नितेश मिश्रा, जिनके बारे में लंबे समय से एक ही संभाग से बाहर नहीं जाने, एक ही जिले में लंबे समय तक काम करने और अन्य जिलों का प्रभार संभालने की चर्चा है,सवाल यह नहीं कि किसी अधिकारी को जिम्मेदारी क्यों दी गई। सवाल यह है कि जिम्मेदारियों, पदस्थापना और प्रभार का यह असाधारण संतुलन आखिर बनता कैसे है और किन नियमों के तहत बनता है? सरकारी दफ्तरों में आम कर्मचारी अगर एक जगह कुछ साल टिक जाए तो स्थानांतरण की फाइल उसके पीछे ऐसे पड़ती है जैसे विभाग को उसकी कुर्सी से व्यक्तिगत शिकायत हो,लेकिन यदि कोई अधिकारी लंबे समय तक एक ही प्रभाव क्षेत्र में बना रहे और ऊपर से अतिरिक्त जिम्मेदारियां भी मिलती रहें,तो सवाल उठना स्वाभाविक है, यहां मामला दो अधिकारियों का है,लेकिन बहस पूरे सिस्टम की है–क्या विभाग में जिम्मेदारी योग्यता के आधार पर बांटी जाती है या फिर प्रभाव के आधार पर? इस 4 अप्रैल 2025 के आदेश में बेनी राम साहू के लिए ऊपर बताए चार प्रमुख शाखा-प्रभार स्पष्ट रूप से दर्ज हैं, वही सूत्रों की माने तो स्टेट लाइसेंस अथॉरिटी, ब्लड बैंक कंट्रोलिंग अथॉरिटी,NDPS या बलौदाबाजार लाइसेंस अथॉरिटी जैसी अतिरिक्त जिम्मेदारियां भी इनके पास है,इसलिए उन्हें इस सारणी में जोड़ना दस्तावेज के आधार पर उचित नहीं होगा।

अब खाद्य विभाग के नितेश मिश्रा की बारी- दूसरा नाम है नितेश कुमार मिश्रा का,पूर्व में सामने रखे गए तथ्यों और आरोपों के अनुसार दिसंबर 2015 में खाद्य सुरक्षा अधिकारी बनने के बाद उनका मूल प्रभार बलरामपुर रहा,अलग-अलग अवधियों में सरगुजा, सूरजपुर और कोरिया जैसे जिलों के अतिरिक्त प्रभार से भी उनका नाम जोड़ा गया,2015 से 2025 के बीच सरगुजा संभाग में लंबे समय तक बने रहने,बाद में पदोन्नति के बाद अंबिकापुर मुख्यालय मिलने तथा 2024-25 में बलरामपुर के मूल दायित्व के साथ अन्य जिम्मेदारियां संभालने को लेकर सवाल उठाए गए हैं, इसीलिए सवाल अब सीधे उठ रहा है...नितेश कुमार मिश्रा अंबिकापुर के अधिकारी हैं या रायपुर के? पदस्थापना अंबिकापुर में हो और विभागीय गलियारों में सक्रियता रायपुर मुख्यालय तक की चर्चा का विषय बने,तो विभाग को यह स्पष्ट करना चाहिए कि उनकी औपचारिक जिम्मेदारी क्या है और स्थापना,स्थानांतरण तथा पदोन्नति जैसे मामलों में उनकी कोई अधिकृत भूमिका है या नहीं, यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि उपरोक्त बातें आरोप और विभागीय चर्चाओं के रूप में सामने आई हैं,नितेश मिश्रा की पूरी सेवा-पुस्तिका,पदस्थापना आदेश, अतिरिक्त प्रभार के आदेश और पदोन्नति के बाद की पोस्टिंग का स्वतंत्र दस्तावेजी परीक्षण इन दावों की पुष्टि के लिए आवश्यक होगा,लेकिन यदि सेवा अभिलेख इन दावों की पुष्टि करते हैं तो सवाल निश्चित रूप से बड़ा होगा–क्या सरकारी स्थानांतरण नीति सभी अधिकारियों के लिए समान है?

बेनी राम साहू,प्रभार की फेहरिस्त छोटी नहीं- 4 अप्रैल 2025 के विभागीय आदेश में बेनी राम साहू को कई महत्वपूर्ण शाखाओं का शाखा प्रभारी अधिकारी बनाया गया है,आदेश में स्थापना शाखा,औषधि शाखा और स्टोर शाखा से जुड़ी जिम्मेदारियां उनके नाम दर्ज हैं, इसलिए उनके पास कई जिम्मेदारियां होने की बात महज चर्चा नहीं,बल्कि उपलब्ध दस्तावेज में दर्ज प्रशासनिक व्यवस्था है,स्थापना शाखा में विधानसभा,लोकसभा और राज्यसभा से संबंधित कार्य,पदोन्नति एवं सेवा संबंधी काम,विभागीय जांच,आपसी आवंटन,उच्च स्तर से प्राप्त पत्रों पर कार्रवाई,पेंशन/सेवानिवृत्ति,न्यायालयीन प्रकरण और अवकाश से संबंधित काम शामिल हैं,यानी फाइलें यहां केवल घूमती नहीं हैं,कर्मचारियों की सेवा से लेकर विभागीय विवादों तक का भविष्य तय करती हैं,औषधि शाखा में औषधि निर्माण,लोक सेवा गारंटी,सेल्स/प्राइमरी सेल्स,मान्यता प्राप्त मेडिकल स्टोर और मेडिकल डिवाइस से जुड़े कार्य शामिल हैं,इसके अलावा स्टोर शाखा में मुख्यालय और प्रयोगशाला की स्टोर शाखा से संबंधित कार्य भी उनके प्रभार में दर्ज हैं,अब सवाल यह नहीं कि जिम्मेदारी बड़ी है या छोटी,सवाल यह है कि इतनी अलग-अलग प्रकृति की महत्वपूर्ण शाखाओं को एक ही अधिकारी के पास रखने की प्रशासनिक जरूरत क्या थी? अगर विभाग में अधिकारियों की कमी थी,तो विभाग को यह बताना चाहिए,अगर यह अस्थायी व्यवस्था थी, तो इसकी समयसीमा क्या थी? और अगर यह स्थायी रूप से चली,तो इसकी समीक्षा कब हुई? सरकारी फाइलों में अक्सर 'अतिरिक्त प्रभार' दो शब्द होते हैं,लेकिन उसके पीछे काम इतना होता है कि एक अधिकारी के दिन में 24 घंटे भी कम पड़ जाएं,फिर सवाल यह भी है कि इतने काम पूरे करने की जिम्मेदारी तो एक अधिकारी की, लेकिन निगरानी और जवाबदेही की व्यवस्था कितनी मजबूत है?

अब नितेश मिश्रा: दस साल की पदस्थापना का दावा- खाद्य विभाग से जुड़े नितेश मिश्रा को लेकर यह दावा सामने आया है कि वे लगभग दस वर्षों तक एक ही संभाग से बाहर नहीं गए और एक ही जिले में लंबे समय तक काम किया,साथ ही अन्य जिलों का प्रभार संभालने तथा पदोन्नति के बाद गृह जिले को चुनने की बात भी सामने रखी जा रही है,लेकिन यहां खबर की सीमा स्पष्ट रहनी चाहिए,उपलब्ध दस्तावेज में नितेश मिश्रा की पूरी सेवा अवधि,पदस्थापना इतिहास और पदोन्नति के बाद गृह जिले की पोस्टिंग का स्वतंत्र प्रमाण मौजूद नहीं है, इसलिए इन बातों को दावे और जांच योग्य सवाल के रूप में ही रखा जाना चाहिए,यदि सेवा अभिलेख इन दावों की पुष्टि करते हैं तो सवाल गंभीर होगा–क्या सरकारी पदस्थापना नीति में लंबे समय तक एक ही संभाग में बने रहने की कोई विशेष प्रशासनिक वजह थी? और यदि रिकॉर्ड इन दावों को खारिज करते हैं,तो वही रिकॉर्ड चर्चा का सबसे साफ जवाब होगा। आखिर सरकारी व्यवस्था में सबसे मजबूत जवाब बयान नहीं,आदेश होता है।

रायपुर की दौड़ आखिर क्यों?- नितेश मिश्रा को लेकर विभागीय सूत्रों के हवाले से यह आरोप भी सामने आता रहा है कि वे अपने कार्यस्थल की तुलना में रायपुर स्थित उच्च कार्यालय में अधिक सक्रिय रहते हैं और स्थापना,स्थानांतरण तथा पदोन्नति से जुड़े मामलों में प्रभाव रखते हैं,यहां तक कहा जाता है कि मनचाही जगह पदस्थापना चाहिए या पदोन्नति में कोई अड़चन है तो उनसे संपर्क करने की चर्चा होती है,यह आरोप गंभीर है, लेकिन बिना दस्तावेज इसे सच मानना पत्रकारिता की दृष्टि से उचित नहीं होगा,फिर भी सवाल यह है कि ऐसी चर्चा पैदा क्यों हुई? क्या उनके पास इन मामलों में कोई औपचारिक अधिकार है? यदि नहीं, तो विभागीय कर्मचारी उन्हें इन प्रक्रियाओं से जोड़कर क्यों देखते हैं? और यदि वे केवल अपने नियमित दायित्व निभाते हैं, तो उनकी भूमिका को लेकर बनी धारणा खत्म करने के लिए विभाग स्पष्ट स्थिति क्यों नहीं रखता? यही वह जगह है जहां 'सेटिंग'जैसे शब्द विभागीय फुसफुसाहट से निकलकर सार्वजनिक सवाल बन जाते हैं,आरोप की पुष्टि जांच से होगी,लेकिन जांच की जरूरत से इनकार नहीं किया जा सकता, पिछले वर्षों के स्थानांतरण और पदोन्नति आदेशों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो पता चल सकता है कि निर्णय सामान्य प्रशासनिक प्रक्रिया के तहत हुए या किसी विशेष पैटर्न के साथ।

प्रभाव या सिर्फ संयोग...फैसला फाइल करेगी- बेनी राम साहू के मामले में उपलब्ध आदेश यह बताता है कि कई संवेदनशील शाखाओं की जिम्मेदारी एक ही अधिकारी के पास है, नितेश मिश्रा के मामले में लंबे समय तक एक ही संभाग में बने रहने और कई जिलों के दायित्व संभालने के दावे हैं,इन दोनों स्थितियों से अपने आप राजनीतिक संरक्षण या किसी सिंडिकेट का प्रमाण नहीं मिलता,लेकिन अगर विभाग पारदर्शिता को लेकर गंभीर है तो दोनों मामलों की प्रशासनिक पृष्ठभूमि सार्वजनिक करने में उसे कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए,क्या अतिरिक्त प्रभार देने के लिए लिखित कारण दर्ज हैं? क्या ऐसे प्रभार की समय-समय पर समीक्षा होती है? क्या लंबे समय तक एक ही क्षेत्र में पदस्थ अधिकारियों के लिए रोटेशन की नीति लागू होती है? क्या पदोन्नति के बाद गृह जिले की पोस्टिंग के लिए सभी अधिकारियों को समान अवसर मिलता है? और यदि किसी अधिकारी की मुख्यालय में सक्रिय भूमिका की चर्चा है तो क्या उसका कोई अधिकृत दायरा निर्धारित है? व्यंग्य में कहें तो सरकारी सेवा में नियमों की किताब मोटी जरूर है,लेकिन असली परीक्षा तब होती है जब कोई कर्मचारी पूछता है– 'यह नियम मेरे लिए भी है न?'अगर जवाब हां है, तो वही नियम हर अधिकारी पर दिखाई भी देना चाहिए।

संरक्षण किसका,व्यवस्था किसके भरोसे?- नितेश मिश्रा को लेकर कथित सिंडिकेट और अपने समाज के लोगों को लाभ पहुंचाने जैसे आरोप भी सामने रखे गए हैं,इन आरोपों को प्रमाणित करने के लिए ठोस दस्तावेज जरूरी हैं और किसी व्यक्ति की सामाजिक पहचान के आधार पर पक्षपात का निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है,लेकिन यदि दावा किसी खास समूह को बार-बार लाभ पहुंचाने का है तो संबंधित वर्षों के पदस्थापना,प्रभार और पदोन्नति आदेशों का तुलनात्मक परीक्षण किया जा सकता है,इसी तरह बेनी राम साहू के प्रभार को लेकर भी सवाल व्यक्ति की क्षमता पर नहीं,व्यवस्था के केंद्रीकरण पर है, यदि इतने महत्वपूर्ण काम एक अधिकारी को सौंपना प्रशासनिक आवश्यकता थी तो कारण स्पष्ट होना चाहिए। अगर विभाग में अधिकारियों की कमी थी तो वह स्थिति भी सामने आनी चाहिए। इससे यह स्पष्ट होगा कि व्यवस्था मजबूरी थी या पसंद,अंततः सवाल दो अधिकारियों के नाम से शुरू होकर पूरे विभाग की कार्यशैली तक पहुंचता है,क्या पदस्थापना और प्रभार के निर्णय रिकॉर्ड पर आधारित हैं? क्या उनकी नियमित समीक्षा होती है? और क्या किसी अधिकारी की व्यक्तिगत पहुंच प्रशासनिक प्रक्रिया से बड़ी तो नहीं हो रही? खाद्य एवं औषधि प्रशासन की जिम्मेदारी जनता के स्वास्थ्य और सुरक्षा से जुड़ी है। इसलिए इस विभाग में केवल खाद्य और औषधि की गुणवत्ता ही नहीं,प्रशासनिक निर्णयों की पारदर्शिता भी साफ होनी चाहिए,बेनी राम साहू और नितेश मिश्रा से जुड़े सवालों का अंतिम उत्तर आरोप नहीं,बल्कि सेवा अभिलेख,आदेश और विभागीय जांच ही दे सकते हैं।

बेनी राम साहू : एक अधिकारी,कई शाखाएं और सवालों की लंबी सूची...

बेनी राम साहू के मामले में सबसे मजबूत आधार खुद विभाग का 4 अप्रैल 2025 का कार्यालयीन आदेश है,इस आदेश में उन्हें कई शाखाओं का शाखा प्रभारी अधिकारी बनाया गया है,यानी यह केवल विभागीय गलियारों की चर्चा नहीं,बल्कि उपलब्ध दस्तावेज से सामने आने वाली प्रशासनिक व्यवस्था है,आदेश में स्थापना शाखा की जिम्मेदारी बेनी राम साहू को दी गई है,स्थापना शाखा में विधानसभा,लोकसभा और राज्यसभा से संबंधित कार्य,पदोन्नति एवं सेवा संबंधी कार्य,विभागीय जांच,आपसी आवंटन,उच्च स्तर से प्राप्त पत्रों पर कार्रवाई,पेंशन/सेवानिवृत्ति,न्यायालयीन प्रकरण और अवकाश जैसे महत्वपूर्ण काम शामिल हैं,यानी स्थापना की फाइलें कोई ऐसी फाइलें नहीं हैं जिन्हें चाय की प्याली के साथ आराम से निपटा दिया जाए,यहां कर्मचारियों की सेवा से लेकर विभागीय जांच और न्यायालयीन मामलों तक की जिम्मेदारी जुड़ी है,लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं होती। उसी आदेश में औषधि शाखा में भी बेनी राम साहू को शाखा प्रभारी अधिकारी बनाया गया है,इस शाखा में औषधि निर्माण,लोक सेवा गारंटी, सेल्स/प्राइमरी सेल्स, मान्यता प्राप्त मेडिकल स्टोर और मेडिकल डिवाइस से जुड़े प्रकरण शामिल हैं,इसके बाद स्टोर शाखा भी उनके हिस्से में है,आदेश में मुख्यालय और प्रयोगशाला की स्टोर शाखा से संबंधित समस्त कार्य उनके प्रभार में दर्शाए गए हैं,अब जरा हिसाब लगाइए...स्थापना,औषधि और स्टोर जैसी अलग-अलग प्रकृति की महत्वपूर्ण शाखाएं एक ही अधिकारी के पास। सवाल उठना लाजिमी है कि एक अधिकारी एक साथ इतने मोर्चों पर कितनी प्रभावी निगरानी कर सकता है? सरकारी व्यवस्था में अतिरिक्त प्रभार कोई अपराध नहीं है,स्टाफ की कमी या प्रशासनिक आवश्यकता में ऐसा होना संभव है,लेकिन जब अतिरिक्त जिम्मेदारियां लगातार बनी रहें तो उसकी समीक्षा भी होनी चाहिए। वरना स्थिति ऐसी हो सकती है कि विभाग में फाइलें ज्यादा हों और फाइल देखने वाले वही पुराने दो हाथ!

बेनी राम साहू के पास कौन-कौन सी शाखाएं और क्या-क्या काम?

क्र.	शाखा	बेनी राम साहू की भूमिका	उनके अधीन प्रमुख कार्य
1	स्थापना शाखा	शाखा प्रभारी अधिकारी	विधानसभा, लोकसभा एवं राज्यसभा संबंधी कार्य; पदोन्नति एवं सेवा संबंधी कार्य; विभागीय जांच; आपसी आवंटन; आसन से प्राप्त पत्रों पर कार्रवाई; पेंशन/सेवानिवृत्ति; न्यायालयीन प्रकरण; अवकाश संबंधी कार्य
2	औषधि शाखा	शाखा प्रभारी अधिकारी	औषधि निर्माण/निर्माण संबंधी प्रकरण; लोक सेवा गारंटी; सेल्स/प्राइमरी सेल्स; मान्यता प्राप्त मेडिकल स्टोर; लोकसभा/विधानसभा संबंधी कार्य; मेडिकल डिवाइस संबंधी कार्य
3	स्टोर शाखा	शाखा प्रभारी अधिकारी	मुख्यालय की स्टोर शाखा से संबंधित समस्त कार्य; प्रयोगशाला की स्टोर शाखा से संबंधित समस्त कार्य
4	शिकायत शाखा	शाखा प्रभारी अधिकारी	शिकायत शाखा से संबंधित समस्त कार्य; ONDLS से संबंधित कार्य; e-Office से संबंधित कार्य; EoDB से संबंधित कार्य; औषधि से संबंधित डाटा संधारण

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)